ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 | अंकः 146 | जोधपुरः हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका | जुलाई 2020 | 30/-प्रति

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

## प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। ( अपने घर बैठे ही )

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

# गुरुदेव के 'चरण कमल' ही सर्वोत्तम तीर्थ हैं।

गुरु भावः परं तीर्थं, अन्य तीर्थं निरर्थकम्।
सर्व तीर्थाश्रयं देवि, पादांगुष्ठंच वर्तते।। गुरु गीता-174

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवर्षि, पितृगण, किन्नर, सिद्ध चारण, यक्ष या मुनिगण भी बिना गुरु कृपा के अपने अपने कर्म में सफल नहीं हो सकते। हे देवी ! गुरुभाव ही परम तीर्थ है, दूसरे तीर्थ निरर्थक हैं, सब तीर्थों का आश्रय ( निवास स्थान ) गुरुदेव के चरणों का 'अंगुष्ठ' है।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित



गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग



बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ( ब्रह्मलीन )

वर्ष: 13 अंक: 146 जोधपुर: हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जुलाई 2020

वार्षिक: 300/- द्विवार्षिक: 600/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

## अनुक्रम

मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ मनुष्य शरीर है । ....4
सद्गुरु के साथ संबंध ( सम्पादकीय ) ....5-7
विश्व शांति का पैगाम भारत से ....8
सद्गुरुदेव का निर्देश ही सर्वोपरि है ....9
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....10
संसार का हर परिवर्तन पूर्व निश्चित है । ....11
साधना विषयक बातें ....12-13
साधकों की अनुभूतियाँ ....14-17
'द्विज' - दूसरा जन्मदाता गुरु ....18
रहस्यवादी संत ....19
अगम लोक की यात्रा .... 20
गुरु शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा ....21
श्रीमद भगवद् गीता श्लोक ....22
गुरु महिमा ....23
गुरुतत्त्व सर्वव्यापक है ....24
प्रेम आनन्द स्वरूप है ....25
समर्पण ....26
अन्तर्मुखी आराधना द्वारा जीवन के रहस्य को समझना ....27
हमें सत्य की खोज करनी होगी । ....28
सद्गुरुदेव के अमृत वचन ....29
गुरु भक्ति ....30
योग के आधार ....31
योग के बारे में ....32
वर्तमान भारत ....33
गुरुशक्ति का अनुग्रह ....34
सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा ....35
सिद्धयोग: शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण ....36
सर्वोत्तम यज्ञ-नाम जप ....37
ध्यान की विधि ....38

# मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ मनुष्य शरीर है।

''मैं तो, मानव मात्र में जो एक ही शाश्वत-अविभाज्य सत्ता कार्य कर रही है, उसी की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए विश्व में निकला हूँ। आज विश्व में जितने भी धर्म, जिस स्वरूप में चल रहे हैं, मैं उस संकीर्ण दायरे में कैद होने को तैयार नहीं हूँ।

मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ मनुष्य शरीर है। मैं मात्र इसी ग्रंथ को पढ़ना सिखाता हूँ, अतः जब तक यह ग्रंथ संसार में रहेगा, तब तक मेरा मिशन चलता ही रहेगा। मेरे रहने या ना रहने से इस मिशन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि आज भी मैं हजारों शिष्यों को चेतन कर चुका हूँ।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. )-342001

संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY

Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

# सद्गुरु के साथ संबंध

जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, सद्गुरु की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण होती है। इस संबंध में श्री अरविन्द आश्रम के एक शिष्य श्री नवजात ने जीवन में सच्चे सद्गुरु की भूमिका का अच्छा वर्णन किया है-

''गुरु अपनी चेतना तुम्हें कैसे देते हैं, यह परंपरागत योगों का बहुत महत्त्वपूर्ण अंश है। वे तुम्हें अपने लिये कोई शारीरिक काम दे सकते हैं ताकि शारीरिक संपर्क बना रहे, लेकिन सच्चा संपर्क तो आध्यात्मिक ही होता है। मैंने ऐसे गुरु देखे हैं जो मालूम यह होता है कि आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्वहीन साधारण बातें करते हैं परंतु सारे समय तुम्हें उच्च से उच्चतर चेतना देते जाते हैं और जब तुम वहाँ से उठते हो तो अपने आपको एक और ही व्यक्ति पाते हो। साधारण बातों से मेरा मतलब है तरकारी-भाजी जैसी मामूली बातें, परंतु इन बातों का मुख्य उद्देश्य होता है, उनके शरीर के साथ सान्निध्य और इससे वे तुम्हारी चेतना को कुछ देते हैं।

बहुत-से रास्ते हैं जिनसे गुरु, शिष्य के साथ आंतरिक चेतना में संप्रेषण कर सकते हैं। जैसे स्पर्श द्वारा, जब वे अपना हाथ तुम्हारे सिर पर रखते हैं, इसमें तुम्हें उच्चतर चेतना दी जाती है। मंत्र द्वारा, प्रसाद द्वारा और उससे कम, शब्दों द्वारा भी क्योंकि आध्यात्मिक जीवन में आंतरिक अंधकार को दूर करने के लिये शब्दों में अपेक्षाकृत सबसे कम शक्ति होती है लेकिन उनका भी प्रभाव होता है क्योंकि वे किसी ऐसे व्यक्ति से आते हैं जिसे कुछ सिद्धि प्राप्त हो चुकी है। यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि जब गुरु तुम्हें स्वीकार करते हैं तो वे तुम्हारे संपूर्ण व्यक्तित्व को स्वीकार कर लेते हैं।

और उसे अपने व्यक्तित्व का भाग बना लेते हैं, तुम्हारी समस्याओं को अपना लेते हैं और तुम्हें अपने आध्यात्मिक विकास का भागीदार बना लेते हैं ताकि तुमको उनकी चेतना मिलने लगे। इस तरह से गुरु शिष्यों को स्वीकार करते हैं।

एक ही गुरु अनेक शिष्यों को स्वीकार कर सकते हैं, पर सभी एक ही तरह से या एक ही गति से प्रगति नहीं करते। शिष्य, गुरु से कैसे लाभ उठा सकते हैं इसका एक उदाहरण है एकलव्य की कथा में। महाभारत में कथा आती है कि शिकारियों के राजा का एक बेटा था-एकलव्य। उसने सुना कि उस काल में द्रोणाचार्य धनुर्विद्या के सबसे बड़े ज्ञाता थे। वह शिष्य बनने के लिये उनके पास जा पहुँचा। द्रोणाचार्य ने इंकार कर दिया। एकलव्य बहुत दुःखी हुआ, लेकिन उसने हिम्मत न हारी। वह घर जाने की जगह जंगल में जा पहुँचा और वहाँ द्रोणाचार्य की एक प्रतिमा बनाकर उसके आगे बैठ गया और बोला, ''लीजिये, आप मेरे धनुर्विद्या के गुरु हैं।'' और इस तरह धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा।

एक दिन अर्जुन और द्रोणाचार्य के अन्य शिष्य उसी जंगल में जा पहुँचे। शिकारी कुत्तों में से एक भटककर वहाँ जा पहुँचा जहाँ एकलव्य अपना अभ्यास कर रहा था। एक कुत्ते ने वहाँ भौंकना शुरू किया। एकलव्य ने उसके मुँह पर बाण मारे और उसका भौंकना बंद हो गया। बाण कुछ इस तरह से मारे गये थे कि उन्होंने कुत्ते को कोई चोट नहीं पहुँचायी, गले के अंदर कोई क्षति नहीं की, बस उसका मुँह बंद कर दिया। कुत्ता शिकारियों के पास लौट आया। अर्जुन इस आश्चर्यजनक घटना करे देखकर बड़े विस्मित हो उठे

क्योंकि वे भी ऐसा नहीं कर सकते थे।

अर्जुन उस धनुर्धारी की तलाश में निकले और एकलव्य को देखकर उनकी प्रशंसा की और वे उनके 'गुरु' के बारे में पूछताछ करने लगे। उन्हें यह सुनकर बहुत खेद हआ कि उनके गुरु द्रोणाचार्य थे क्योंकि गुरु ने उसे वचन दे रखा था कि अर्जुन ही उनका सबसे अच्छा शिष्य होगा। अर्जुन ने घर लौटकर गुरु से हतोत्साह होकर शिकायत की। स्वयं द्रोणाचार्य भी आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उन्होंने तो एकलव्य या ऐसे किसी व्यक्ति को शिष्य के रूप में कभी स्वीकार ही नहीं किया था। वे अर्जुन के साथ हो लिये और जाँच करने के लिये एकलव्य के पास जा पहुँचे। एकलव्य ने कहा, ''जी हां, आपने तो मुझे शिष्य के रूप में नहीं स्वीकार किया परंतु मैंने आपको अपना गुरु मान लिया और आपकी इस मूर्ति के द्वारा मैंने आपकी चेतना के साथ अपना नाता जोड़ लिया और इस तरह ऊपर से जाने बिना भी आपकी चेतना ही मेरा पथ-प्रदर्शन करती रही।'' परंतु अधिकतर बात इससे उल्टी हुआ करती है। जब गुरु स्वीकार कर लेते हैं तो वह शिष्य की चेतना से अपना नाता जोड़ लेते हैं और उसके जाने बिना भी उसे मार्ग दिखाते हैं।

मैं इसके बारे में व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ और तुम्हें एक उदाहरण दूँगा। माताजी के आदेश से मैं एक भारतीय गुरु से प्रशिक्षण ले रहा था। एक दिन मैंने एक स्वप्न देखा और माताजी के आगे उसका उल्लेख किया। उन्होंने कहा, ''इस गुरु ने तुम्हें यह स्वप्न दिया है।'' भारतीय योग दर्शन में ऐसा होता है कि गुरु तुम्हें अपनी चेतना में ले सकते हैं और तब केवल वही विचार तुम्हारे अंदर आ सकते हैं जिन्हें वे आने देना चाहें। वे उनमें छानबीन कर सकते हैं, जिन विचारों को अलग करना चाहें

उन्हें अलग कर सकते हैं। लेकिन शिष्य के लिये भी यह संभव है कि वह अपनी चेतना, गुरु की चेतना के साथ जोड़ ले। जब गुरु, शिष्य की चेतना के साथ नाता जोड़ता है तो एक अच्छा शिष्य अपने गुरु की चेतना के साथ संपर्क पाने की कोशिश करता है और चौबीस घंटे, उस संपर्क के साथ रहने की कोशिश करता है क्योंकि तभी उच्चतर चेतना और शक्ति भगवान् से गुरु के द्वारा, शिष्य तक प्रवाहित होगी।

इसीलिये शास्त्रों में कहा गया है कि इस तरह ध्यान करो कि तुम अपने आपको गुरु के हृदय के अंदर अनुभव करो और अपने हृदय में गुरु की उपस्थिति का ध्यान करो।

गुरु के साथ जुड़ने का सबसे अच्छा तरीका है दोहरा ध्यान। ध्यान करो, अपने गुरु को याद करो क्योंकि गुरु मन से ऊपर के स्तरों को व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर चुके हैं। अतः उनके साथ अपने-आपको जोड़कर तुम इन स्तरों के साथ भी नाता जोड़ लेते हो। तुम जो सबसे अच्छा ध्यान कर सकते हो, यह उनमें से एक है-गुरु की चेतना के साथ एक होकर, उनके द्वारा दिये हुए मंत्र की सहायता से ध्यान करना। शिष्य के लिए गुरु से लाभ उठाने का यह सबसे अच्छा तरीका है। यह दोहरा ध्यान तुमको बाहर से सुरक्षित और अंदर से खुला रखता है।

गुरु के प्रति शिष्य का भाव बहुत महत्त्वपूर्ण है। शास्त्रों में गुरु की इस तरह प्रशंसा की गई है कि शायद वह हमें अतिश्योक्ति लगे। जिसमें कहा गया है कि -'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वर।' -गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं। तुम इसके दो तरह से अर्थ कर सकते हो। एक तो यह कि तुम्हारे गुरु इन महान् देवों के प्रतिनिधि हैं, दूसरा यह कि तुम अपने गुरु के अंदर इन

देवों के दर्शन करो तो वे कम-से-कम तुम्हारे लिये इस तरह से अभिव्यक्त होंगे। हो सकता है कि उनके अन्य बीसियों शिष्य हो परंतु उन सबके लिये वे इन रूपों में प्रकट न होंगे, लेकिन तुम्हारे लिये तो होंगे ही।

यह जानना बहुत जरूरी है कि गुरु-शिष्य संबंध कैसा है ! यह केवल गुरु पर नहीं, शिष्य पर भी निर्भर है। शिष्य को अपने गुरु के साथ संबंध इस तरह जोड़ना चाहिए कि उससे उसे पूरा-पूरा लाभ पहुँचे। इसके लिये शिष्य को अपने गुरु के साथ बिलकुल खुला हुआ होना चाहिए। गुरु से कुछ भी नहीं छिपाना चाहिये। जब हम सच्चे गुरु के आगे अपनी सब बातें खोलकर रख देते हैं तो वे हमारी सब त्रुटियों को अपने अंदर ले लेते हैं।

जब हम अपनी कठिनाईयाँ अपने गुरु के सामने रख देते हैं तो यदि गुरु भगवान् के साथ एकात्म हैं तो हमारी सब कठिनाइयाँ उनके द्वारा भगवान् तक पहुँच जाती हैं। यह बिलकुल सच है। भगवान् के साथ संपर्क के कारण हमारी कठिनाईयों के समाधान भी भगवान् के द्वारा आ जाते हैं। हमें केवल गुरु का भौतिक शरीर ही नहीं, उनके पीछे की शक्ति को भी देख सकना चाहिये। हम इसके जितने अभ्यस्त होते जाएंगे उतना ही अधिक उनका और उनके द्वारा भगवान् का दर्शन पा सकेंगे।

तुम्हें गुरु की चेतना के साथ सतत् और संपूर्ण संपर्क रखना चाहिए। यह मन, प्राण और शरीर के साथ होना चाहिये। जैसा कि मैंने कहा, गुरु के साथ भौतिक संपर्क पत्रों द्वारा, शब्दों द्वारा, मंत्र द्वारा या शारीरिक कर्म द्वारा सहायता करता है। तुम जो कुछ चाहते हो गुरु में भगवान् का वही पक्ष देखने की कोशिश करो और उसके प्रति खुलो। तुम संगीत, चित्रकारी, साहित्यिक योग्यता, श्रद्धा, साहस कुछ भी चाह सकते हो, तुम सब कुछ पा सकते हो क्योंकि सभी चीजें भगवान् में हैं। हमारी एकाग्रता द्वारा सभी क्षमताएँ जाग सकती हैं, अपनी अभीप्सा द्वारा हम उन्हें नीचे बुला सकते हैं और अपनी ग्रहणशीलता द्वारा हम उन्हें पा सकते हैं, अपने समर्पण द्वारा हम उन्हें आत्मसात् कर सकते हैं। यह प्रक्रिया इस तरह काम करती है।

अगर तुम तेजी से प्रगति करना चाहते हो तो अपने आप मार्ग का चुनाव न करो, गुरु को चुनने दो। गुरु में तुम्हारे भूत, भविष्य और वर्तमान को देखने की तीव्र दृष्टि है, वे जानते हैं कि तुमको लक्ष्य की ओर ले जाने के लिये किस रास्ते से जाना चाहिये। तुमको ढलवां रास्ते से जाना चाहिये जो सचमुच तेजी से ले जानेवाला लेकिन कठिन पथ है या फिर कम ढालवाले पथ से, जो अधिक आसान लेकिन लंबा रास्ता है। इन सब बातों का फैसला अपने गुरु के हाथों में छोड़ दो परंतु अपनी कठिनाई उनके सामने रखते हुए संकोच न करो, अगर तुम्हारे अंदर किसी चीज के लिये अभीप्सा या ललक पैदा होती है तो उनसे कह दो।

तुम्हारी समस्या चाहे जैसी क्यों न हो-भौतिक हो या आध्यात्मिक, उसका हल हो जाएगा। ऐसे लोग हैं जिनके सामने और तरह की समस्याएँ हैं, जैसे राजनीतिक समस्याएँ। उन्हें इनको गुरु के आगे रख देना चाहिये और गुरु को ही ठीक करने देना चाहिये कि क्या करें? गुरु को सब पता होगा कि हमें कौन-सी राह दिखायें और वे हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचा देंगे। संक्षेप में यही तरीका है जिससे हम जान सकेंगे कि सद्गुरु के संपर्क से कैसे लाभ उठायें?''

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा बताए संजीवनी मंत्र का सघन जाप और सुबह-शाम नियमित रूप से 15 मिनट का ध्यान ही उनकी परम चेतना के साथ जुड़े रहने का एक उच्चतम तरीका है। सद्गुरुदेव के प्रति गाढ़ी प्रीति और संपूर्ण समर्पण ही योग मार्ग में आगे बढ़ने में सहायक है।

-संपादक

**गुरु गोविन्द की आत्मा, मैं गुरों की देह।**
**सद्गुरु मुझमें यों रमे, ज्यू बादल में मेह।।**

# विश्व शांति का पैगाम भारत से

## एक मानव, एक भाषा एवं एक झण्डा

अमेरिका के श्री एन्डरसन के अनुसार विश्व युद्ध में चीन अमेरिका के दो शहरों पर अणु बम गिराएगा। अमेरिका व रूस मिलकर चीन को नष्ट कर देंगे। मुस्लिम देशों में भीषण रक्तपात होंगे। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति "एक मानव, एक भाषा, एक झण्डा" की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा संसार में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख शांति भर देगा।

# सद्गुरुदेव का निर्देश ही सर्वोपरि है

**मान सहित विष खायके, शम्भु भये जगदीश।**
**बिना मान अमृत पीये, राहु कटायो शीश।।**

प्राचीन काल की कथा के अनुसार-समुद्र मंथन के समय 14 प्रकार के रत्न निकले थे। उसमें हलाहल जहर और अमृत भी थे। अमृत देवताओं के हिस्से में आया था। भगवान् विष्णु देवताओं को अमृत पिला रहे थे। अमृत पीने वाला अमर हो जाएगा, यह बात राक्षसों को मालुम थी। छल-कपट से 'राहु' नाम के राक्षस के मन में विचार आया कि मैं चुपचाप जाकर देवताओं की पंक्ति में खड़ा हो जाऊँगा तो अमृत पीकर अमर हो जाऊँगा।

ऐसी मनोभावना लेकर वह देवताओं की पंक्ति में खड़ा हो गया। भगवान् विष्णु देवताओं को अमृत पीला रहे थे। इसी कड़ी में उन्होंने 'राहु' को भी अमृत पीला दिया, लेकिन तत्काल ही उन्हें ज्ञात हो गया। तब अमृत के गले से नीचे उतरने से पहले ही सुदर्शन चक्र ने उसका गला धड़ से अलग कर दिया।

ईश्वर के यहाँ परम सत्य ही चलता है। छल-कपट से किया गया काम अन्त में वो ही हाल करवाता है जो 'राहु' का हुआ।

भगवान् का यह परम विधान है कि यदि कोई उनका बार बार तिरस्कार भी करे तो वह उसे माफ कर देते हैं लेकिन गुरु पद का एक बार भी अपमान किया तो उसको माफ नहीं किया जाता।

यह अमर ज्ञान तो सद्गुरु के चरणों में कण मात्र बनकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान में इस दुनिया को चिर शांति और आनन्द देने हेतु सद्गुरुदेव प्रकट हुए और संजीवनी मंत्र द्वारा शक्तिपात दीक्षा के विधान से मानव को दिव्यता की ओर ले जाने का मार्ग

बताकर असीम करूणा की।

उन्होंने कहा, ''मेरे जाने के बाद मेरी तस्वीर कभी नहीं मरेगी, वह आपको जवाब देगी, और जवाब ही नहीं हजार गुणा सही जवाब देगी''।

वर्तमान में पूरी दुनिया के लिए सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर ही सजीव सद्गुरु हैं। जो उनकी तस्वीर के सामने बैठकर मंत्र जप व ध्यान करेगा, उसमें वही परिवर्तन आएगा जो सद्गुरुदेव के भौतिक जीवन में रहते हुए आता था। आज भी लाखों लोग तस्वीर से ध्यान कर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

गुरु-शिष्य के रिश्ते में अन्य किसी भी व्यक्ति का कोई भी स्थान नहीं हो सकता। शिष्य का अपने गुरु के साथ सीधा सम्पर्क होना चाहिए। कुछ साधक, गुरुदेव के अन्य शिष्यों को गुरुदेव जितना मान देकर और उनकी बताई युक्तियों और बातों पर, गुरुदेव की कही बातों से ज्यादा भरोसा करके, भ्रमित हो जाते हैं। कोई भी साधक भ्रमित नहीं हो, किसी भी बिचौलिये की जरूरत नहीं है।

आप सब से निवेदन है कि गुरुदेव से जुड़े रहने के लिए एवं इस दर्शन को गहनता से समझने के लिए ज्यादा से ज्यादा सद्गुरुदेव के प्रवचन सुनें और सद्गुरुदेव से ही करूण प्रार्थना करें कि वे आपको सद्बुद्धि दें एवं आपका मार्ग दर्शन करते रहें।

संबंध सिर्फ गुरु और शिष्य का ही होता है। बीच में किसी की भी जरूरत नहीं है।

सद्गुरु की आज्ञा के विपरीत चलना शिष्य के लिए गर्त का मार्ग है।

◆◆◆

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म में गुरु का पद ईश्वर से भी महान् माना गया है। इस सम्बन्ध में गुरुगीता में कहा है:—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

मैं नाथ मत का अनुयायी हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाई नाथ जी योगी आई-पंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज माने गये हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत में ज्ञान-क्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।

भारत इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्वप्रथम रजोगुण के विकास की आवश्यकता है। व्यवहारिक भाषा में भारतीयों की प्रथम आवश्यकता रोटी की है, राम का स्थान दूसरे नम्बर पर है।

पश्चिमी जगत भौतिक-सुविधाएं भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशान्त पश्चिमी जगत है उतना अशान्त इस धरा का कोई देश नहीं। आज उन्हें मात्र शान्ति की ही भूख बाकी बची है, और शान्ति केवल राम अर्थात् ईश्वर तत्व ही दे सकता है।

क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने से ही सम्भव है। अतः मुझे कलियुग के आदि गुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से पश्चिमी जगत को चेतन करने का है। उसी आदेश के कारण अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत में ही कार्य करना चाहता हूँ।

21वीं सदी मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है। अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

रामलाल
19/9/97
जोधपुर

पुनः → जो "परमहंस पद" प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए रजोगुण की प्राप्ति ही परमकल्याण-प्रद है। बिना रजोगुण के क्या कोई सत्त्वगुण प्राप्त कर सकता है? बिना भोग का अन्त हुए, योग (मिलन) हो ही कैसे सकता है? बिना वैराग्य के त्याग कहाँ से आवेगा।

"स्वामी श्री विवेकानन्द जी"

# संसार का हर परिवर्तन पूर्व निश्चित है।

संसार की यह कहावत कि ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, पूर्ण सत्य है।

भगवान् श्री कृष्ण ने 11 वें अध्याय के 32-34 श्लोक में स्पष्ट कहा है :-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो,
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे,
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व,
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव,
निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्।।
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च,
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मयाहतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा,
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।

(मैं) लोकों का नाश करने वाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत हुआ हूँ, जो प्रतिपक्षियों की सेना में स्थित हुए योद्धालोग हैं, वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे। इससे तू खड़ा हो और यश को प्राप्त कर, शत्रुओं को जीतकर धन-धान्य से सम्पन्न राज्य को भोग। यह सब (शूरवीर) पहले से ही मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन केवल (तू) निमित्तमात्र ही हो जा।

द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह, जयद्रथ और कर्ण तथा और भी बहुत से मेरे द्वारा मारे हुए शूरवीर योद्धाओं को तू मार, भय मत कर, निःसन्देह (तू) युद्ध में वैरियों को जीतेगा, इस लिए युद्ध कर।

भगवान् के उपर्युक्त उपदेश से स्पष्ट होता है कि यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तृत स्वरूप है। जीव, संसार के हर कार्य में निमित मात्र है। ईश्वर की त्रिगुणमयी माया जीवों को भरमाती हुई अपनी इच्छा से चला रही है। जीव अन्धकार वश झूठे अहम् में आकर जबरदस्ती कर्ता बन बैठता है और इस प्रकार तामसिक वृत्तियों के चक्कर में फँस कर, जन्म-मरण के जाल में फँसा हुआ, दुःख भोग रहा है। स्थिति को और स्पष्ट करते हुए भगवान् ने18 वें अध्याय के 61 वें श्लोक में कहा है :-

ईश्वरः सर्वभूतानां
हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि
यन्त्रारूढानि मायया।।61।।

हे अर्जुन ! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।

ऐसी स्थिति में भी जीव अपने अन्दर विराजमान उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार के अभाव में जन्म-मरण के चक्कर में फँस कर भंयकर दुःख भोग रहा है। इस युग में सभी आराधनाएँ बहिर्मुखी हैं, ऐसी स्थिति में ईश्वर का दर्शन और प्रत्यक्षानुभूति असम्भव है।

तोते की तरह धार्मिक ग्रन्थों को रटने से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। जब तक जीव, तत्त्व से उस परमसत्ता को नहीं पहचानता है, कुछ भी लाभ होना असम्भव है। गीता रूपी ज्ञान के अमृत का भी पान करने की स्थिति में जीव आज नहीं है। ऐसी स्थित स्पष्ट करती है कि संसार पूर्ण रूप से तामसिक वृत्तियों से घिर चुका है। सात्त्विक वृत्तियों का लोप प्रायः हो जाना स्पष्ट संकेत है कि संसार में आमूलचूल परिवर्तन होने वाला है। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि अब संसार से तामसिक वृत्तियों का अन्त होने वाला है। जितने आध्यात्मिक गुरु, इस समय संसार में है, पहले कभी देखने-सुनने में नहीं आये। परन्तु उनके रहते हुए भी संसार में अन्धकार निरन्तर ठोस होकर जम रहा है। ऐसी स्थिति में संसार का मानव इन गुरुओं पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाये बिना नहीं रह सकता।

बेचारे सभी धर्मगुरु, युग के गुण धर्म और काल की गति के प्रवाह में ऐसे फँसे हुए हैं कि वे अपने आपको बचाने में असमर्थ हैं। डूबते हुए व्यक्ति की तरह उल्टे सीधे हाथ पाँव मार रहे हैं। इतिहास बताता है कि संसार में जब-जब भी ऐसी स्थिति पैदा हुई है, उस परमसत्ता ने अवतरित होकर जीवों का कल्याण किया है।

इस बारे में भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के 7 वें और 8 वें श्लोक में स्पष्ट घोषणा की है :-

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।।4:7।।
परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे ।।4:8।।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
31.03.1988

# साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध, शुद्ध-अशुद्ध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने की पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है, यदि सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने साधकों को समय समय पर कई विषयों पर समझाया है। मानव से अतिमानव की यात्रा मार्ग में, दिव्य रूपान्तरण के लिए, सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए और पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमों सहित कई प्राचीन योगियों की आराधना के समय, इस मार्ग के साधकों का जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायता मिल सके।

प्रश्नः- कल रात सपने में देखा कि मेरा मन, प्राण और प्रकृति भी तुम्हारे पथ पर चलने में सहायता कर रही है। यह क्या कभी सच होगा?

उत्तरः- यदि तुम शांत और स्थिर बनी रहो तो वे आज से ही सहायता कर सकती हैं। तपस्या की अग्नि प्रज्ज्वलित होने पर कंपन और सिर में एक तरह की असाधारण अवस्था सबकी होती है। स्थिर बने रहने से वह और नहीं टिकती, सब शांत हो जाता है।

प्रश्नः- कल रात से सिर के ऊपर खूब शांत और गंभीर चीज अनुभव कर रही हूँ। कभी तो वह विस्तृत होकर पूरे आधार पर फैल जाती है, या कभी हृदय और मन में उतर कुछ देर तक रहती है।

उत्तरः- यह शुभ लक्षण है। यह है असली अनुभूति। यही शांति जब समस्त आधार में व्याप्त हो जाती है और दृढ़, ठोस एवं स्थायी हो जाती है तभी भागवत चेतना की पहली भित्ति स्थापित होती है।

ऐसा करना सबके लिये कठिन है। शांति सत्य इत्यादि पहले भीतर स्थापित होते हैं, इसके बाद कार्य में लक्षित होते हैं।

खालीपन से डरो नहीं। खालीपन में ही भागवत शांति उतरती है। शक्ति हमेशा ही तुम्हारे भीतर विराजमान है। लेकिन शांति, शक्ति और प्रकाश अपने अंदर स्थापित न होने से उनकी उपस्थिति का अहसास नहीं होता।

सब बाधाएँ तो विरोधी शक्तियों की सृष्टि नहीं हैं-साधारण अशुद्ध प्रकृति की सृष्टि हैं जो सभी के अंदर है।

तपस्या सिर्फ यही है कि स्थिर रहो, शक्ति को पुकारो, खूब शांत दृढ़भाव से अशान्ति का, निराशा का, कामना-वासना का वर्जन (त्याग) करो।

आश्रम में जो बीमारी जिस-तिस को घेर रही है, यह उसी का लक्षण है-स्थिर रहने से यह मात्र छूकर चली जायेगी।

प्रश्नः- कभी-कभी मेरे भीतर एक ऐसी शक्ति और तेज आता है तब लगता है कि कोई मिथ्यात्व की शक्ति मुझे छू नहीं सकती।

उत्तरः- हां, ऐसी शक्ति आधार में हमेशा बनी रहे तो साधना बहुत-कुछ आसान हो जाती है-यदि इसमें अहंकार न आ मिले।

बाधाएँ सब के सामने आती हैं-जो काम नहीं करते उनके सामने भी विशेष प्रबलता से बाधाएँ आती हैं।

प्रश्नः- ध्यान करते समय पहले की तरह गहराई में और समाधि में क्यों नहीं जा पाती हूँ?

उत्तरः- योगशक्ति का जोर अभी प्रकृति के रूपांतर पर, शांति और ऊर्ध्व चेतना के अवतरण और प्रतिष्ठा पर ज्यादा है, गंभीर ध्यान की अनुभूति पर उतना नहीं-जैसा पहले होता था।

( योग मार्ग में साधक जब पहले पहल सद्गुरुदेव से दीक्षा लेकर मंत्र जप के साथ ध्यान करता है तो वो असीम गहराई में चला जाता है, कई बार समाधि अवस्था में चला जाता है, एक अजीब प्रकार का नशा चढ़ा रहता है।

उसको उस आनंद के सिवाय कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। यह एक अवस्था होती है, और ऐसा कई साधकों के साथ होता है। लेकिन कुछ समय बाद ये स्थितियाँ नहीं रहती हैं, कुछ बदलाव आता है। उसके आंतरिक स्वभाव में रूपांतरकारी शक्तियाँ, उसके चेतना के स्तर पर गहराई में चली जाती हैं और उसको पहले जैसा महसूस नहीं होता है तो साधक परेशान हो जाता है कि मेरा ध्यान नहीं लगता है जबकि उसका आंतरिक विकास निरंतर गुरु कृपा से हो रहा है, यदि सद्गुरुदेव के बताए अनुसार साधक अनवरत आराधना कर रहा है। चाहे बाहर के स्तर पर उनको कुछ भी महसूस नहीं हो रहा पर आंतरिक विकास जारी है। )

प्रश्नः- आज देखा कि मूलाधार का शक्ति ( गुरु ) की चेतना के साथ एक स्वर्ण-डोर से संबंध जुड़ा है।

उत्तरः- इसका अर्थ हुआ कि गुरु की चेतना के साथ तुम्हारी Physical ( भौतिक ) चेतना का एक संबंध जुड़ा है। स्वर्ण-डोर उसी संबंध का प्रतीक है।

प्रश्नः- मेरे अंदर मन-मरा अलसाया-सा भाव आया है। और दो दिन से देख रही हूं कि मन, प्राण की चेतना मुझे छोड़ बाहर की चीजों के साथ और चेतना के साथ लिप्त हो चक्कर काट रही है। तुम्हें खोकर शून्य निर्जनता के बीच में पड़ी हूँ जैसे।

उत्तरः- यदि ऐसा ही है तो इसका अर्थ है कि तुम्हारे भीतर की सत्ता बहुत-कुछ स्वतंत्र और मुक्त हो गयी है। बाहरी सत्ता ही बाहरी चीजों से युक्त होती है। इस बाहरी सत्ता को भी

आलोकित और मुक्त करना जरूरी है।

सफेद गुलाब का अर्थ है शक्ति के प्रति प्रेममय आत्मसमर्पण। उसका फल होगा सत्य के आलोक का आधार में विस्तार। सफेद कमल-तुम्हारे मानसिक स्तर पर शक्ति की प्रस्फुटित चेतना। नारंगी रंग का आलोक ( Red Gold ) -देह में अतिमानस का प्रकाश ( Supramental in Physical )।

सत्य तक सीधा पहुँचने का रास्ता है आधार खोलना। आधार में उस अवस्था में जो समर्पण किया जाता है वह सहज-सरल भाव से शक्ति के पास जाकर ऊपर सत्य के साथ मिल जाता है, सत्यमय हो जाता है।

प्रश्नः- ऊपर से एक बड़े चक्र की तरह मेरे मस्तक में कुछ उतरा है और उसका यह प्रभाव देखती हूँ कि सब स्तरों पर थोड़ा-थोड़ा फैल रहा है।

उत्तरः- यह है गुरु की शक्ति की एक क्रिया जो ऊर्ध्व चेतना से मानसिक स्तर पर उतर, सारे आधार में कार्य करने के लिये फैल रहा है।

प्रश्नः- आत्मा के गंभीर प्रदेश में एक गंभीरतम जगत् है। इस जगत् में ऊर्ध्व की ओर जाता एक सीधा रास्ता-सा देखा।

उत्तरः- अर्थ-वहाँ परम सत्य के साथ एक संबंध स्थापित हो गया है।

प्रश्नः- नाभि के ऊपर से एक चमकीले सांप को रेंगते, बल खाते ऊपर की ओर चढ़ते देखा।

उत्तरः- इसका अर्थ है परा शक्ति ( कुण्डलिनी ) ऊर्ध्व सत्य के साथ मिलने के लिये उठ रही है।

साधकः- गुरुदेव, 15 मिनट से ज्यादा ध्यान कर सकते हैं ?

गुरुदेवः- केवल 15 मिनट ही ध्यान करो और मंत्र हर समय जपो, ध्यान आपको 15 मिनट ही करना है। कुछ लोग देर तक बैठे रहते हैं, बाद में मुश्किल हो जाएगी।

# हृदय स्पर्शी अनुभूति

मैं नेत्रपाल सिंह गुजरात के आनंद सिटी में आर्मी में नौकरी कर रहा हूँ। मैं अपने शारीरिक जाँच के लिए मुम्बई के अश्विनी अस्पताल में गया हुआ था। 11 जुलाई 2019 को मुझे वहाँ पर गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी मिली और अश्विनी अस्पताल में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में मैंने संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया। मुझे बहुत अच्छा लगा। लेकिन मैं नियमित रूप से मंत्र जाप और ध्यान नहीं कर सका। कभी किया कभी नहीं किया लेकिन अप्रेल 2020 से लगातार कर रहा हूँ और मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।

ध्यान के दौरान विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ और आसन स्वतः ही हो रहे हैं। इससे मुझे बड़ा ताजुब होता है कि मैं सीधा पालथी मारकर बैठता हूँ और ध्यान के दौरान मुझे दबाव महसूस होता है और बिना चाहे भी मैं पीछे की तरफ लुढ़क जाता हूँ। गहरी तन्द्रा लग जाती है।

रात को सोते समय मंत्र जप करता रहता हूँ जब तक नीद नहीं आती है। एक रात को क्या देखता हूँ कि अर्जुन और एक शिकारी जंगल में युद्ध लड़ रहे हैं। अचानक श्री कृष्ण प्रकट होते हैं और आवाज आती है कि हे अर्जुन तेरे सामने जो युद्ध लड़ रहे हैं वो भोलेनाथ हैं। इनको पहचानो और इनसे आशीर्वाद लो। फिर भोलेनाथ बोले कि ये देख अर्जुन, मैं ही गुरु हूँ, ऐसा कहकर बाबा श्री गंगाईनाथ जी का रूप धारण कर लिया। फिर गंगाईनाथ जी ने भोलेनाथ का रूप बना लिया। भोलेनाथ श्री कृष्ण के रूप में परिवर्तित हुए और विराट स्वरूप दिखाया। मेरा रोम रोम हर्षित हो गया और धीरे-धीरे मेरी आँखें खुल गई।

ऐसे परम दयालु सद्गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि नमन् करता हूँ

नेत्रपाल सिंह

आनंदसिटी ( गुजरात )

## हाड़ौती क्षेत्र के स्थानीय चैनल पर सिद्धयोग की जानकारी

**एवीएसके, शाखा-कोटा की तरफ से STN चैनल नम्बर 251 पर प्रतिदिन रात्रि 8:45 बजे 'गुरुदेव सियाग सिद्धयोग 'से संबंधित संक्षिप्त जानकारी और संजीवनी मंत्र द्वारा शक्तिपात दीक्षा दी जा रही है। इसका प्रसारण पूरे हाड़ौती संभाग ( कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ ) में प्रतिदिन किया जा रहा है। जन समुदाय के हित में आपसे अनुरोध है कि इसकी सूचना अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाएं।**

एवीएसके, शाखा-कोटा स्थानीय सम्पर्क : 9784742586

गतांक से आगे...

# सद्गुरुदेव के पावन मिलन का वृत्तांत

मैंने डरकर बहुत ही जोर से हाथ आँगन में पटका। आवाज सुन कर माँ की आँख खुल गई। दौड़कर मेरे पास आकर बोलीं क्या हुआ ?

रात को इतना जल्दी उठ कर क्या कर रहा है ? पागल हो गया है क्या ? माँ को क्या समझाता ? मैं चुपचाप ही रहा। परन्तु मैंने माँ को आश्वस्त करने का प्रयास किया कि गुरुदेव गृहस्थी संत हैं। संन्यास की दीक्षा नहीं देते हैं। मैं कभी भी संन्यासी नहीं होऊँगा। तब जाकर थोड़ी शांत हुई।

पहले मेरा विचार था कि घर जाकर सबको बताऊँगा तो सारे खुश हो जाएंगे, यह बात मेरी माँ को बताने के बाद, उनके विरोध करने पर, मुझे समझ मे आया कि हर कोई को समझाना तो बड़ा मुश्किल है। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी।

मेरे पड़ोस में मेरे ताउजी का बेटा, जो मेरा भाई और घनिष्ठ मित्र भी था, मैं उससे मिलने गया। वह नित्य गीता का पाठ करता था। वह गीता पाठ रोककर बोला कि क्या बताने आये हो ? मैंने कहा पहले अपना गीता पाठ पूरा कर लो। बाद में योग की सही जानकारी प्रदान करूँगा। वह जिद करने लगा कि पाठ बाद में कर लूँगा। मुझे जानकारी दो। गुरुदेव और दर्शन के बारे में मैंने विस्तार पूर्वक सब कुछ बताया। वह बहुत ही प्रभावित हुआ। उसके माता पिता भी मेरे पास बैठ कर ध्यान देकर सुन रहे थे। मैं घर आ गया। थोड़ी देर मानसिक तनाव के कारण सचमुच पागल हो जाता, ठीक हुआ हूँ। यह तो वास्तव में योग है, जो सबसे पहले तुम्हारी गीता के अनुसार

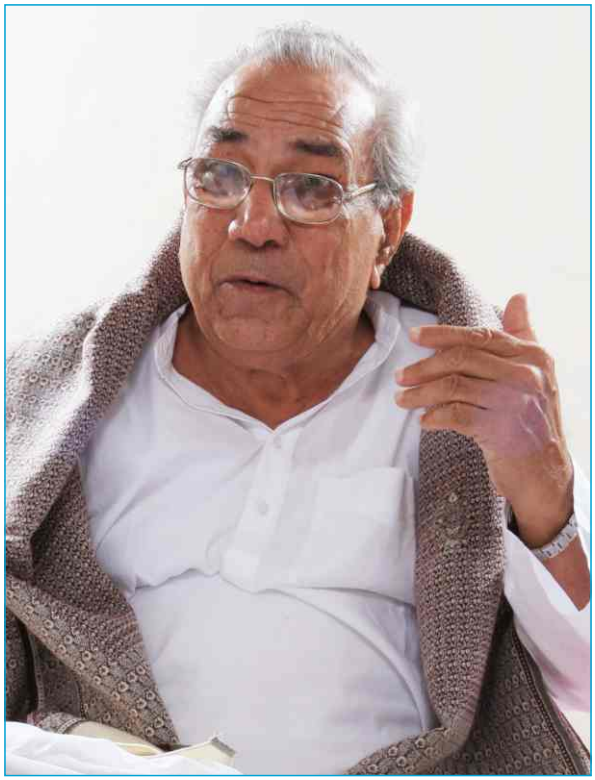

सूर्य को प्राप्त हुआ था। अब क्रमिक विकास के कारण अब अपने जैसे पागलों के पास आ रहा है। इस लिए यह विस्फोट है। आगे बहुत बड़ा विस्फोट होगा। और मेरे और तेरे जैसे पागलों की संख्या बढ़ती ही जायेगी। इसका कोई ईलाज नहीं है। यदि तुम भी सचमुच में पागल होना चाहते हो तो मेरी यह बात मान लो। पर यह क्या मैं तो सोच रहा था कि यह सच्चाई सुनकर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ेगी पर यहाँ तो उल्टा विरोध हो रहा है। उसके यह बात पूरी तरह समझ में आ गई। वह बोला कि मुझे तो इन्हीं गुरुदेव से दीक्षा दिलाओ। उसके साथ दो और भाई तैयार हुए, हमारी ढाणियों से। मैंने बीकानेर का पता दे दिया कि अब इस गुरुवार को बीकानेर में दीक्षा कार्यक्रम हो सकता है। पक्का तो नहीं कह सकता। वे बोले तुझे साथ चलना पड़ेगा। हम में से किसी ने भी अभी तक तो ठीक से जोधपुर भी नहीं देखा है। इसलिए हम अकेले तो जा नहीं सकते। इसलिए बीकानेर से सुजानगढ़ अपनी ड्यूटी पर चले जाना।

मैं तैयार हो गया। ठीक है चलेंगे। हम सभी ने घर वालों को बिना बताये चलना तय किया। बुधवार की सुबह दस बजे अलग अलग घरों से निकल कर स्टेशन पहुँचे। हमारे गाँव बालेसर से सीधी बीकानेर के लिए बस नहीं थीं। इसलिए फलोदी पहुँचकर, वहाँ से बीकानेर की बस पकड़ी। रात को लगभग आठ बजे बीकानेर पहुँचे। वहाँ प्रताप बस्ती में पहुँचकर एक किराणे की दुकान पर गुरुदेव के विषय में पूछा तो उन्होंने

बताया कि यहाँ तो लगभग एक डेढ़ साल पहले, यह गुरुदेव आते थे। आजकल तो कभी नहीं आते हैं। हमने पूछा कि अब कहाँ रहते हैं। पता हो तो बताओ? वे बोले कि ठीक से तो मुझे भी पता नहीं है, किन्तु सुना है कि आजकल व्यास कालोनी में रहते हैं।

हम रात को भी बिना कहीं विश्राम किये, वहाँ से व्यास कालोनी के लिए निकल पड़े। रास्ते में कोई भी मिलता, गुरुदेव का नाम लेकर पूछते, पर कोई भी जबाब नहीं देता। इस प्रकार रात के लगभग 11 बज चुके थे। रात में गश्त में निकली पुलिस की गाड़ी हमें देखकर रुकी और कहने लगे कि इस तरह क्यों गलियों में घूम रहे हो। कहीं जगह देख कर सो जाओ। यहाँ नजदीक में कोई सराय भी नहीं है। दोबारा इस तरह गलियों में घूमते देखा तो चोर समझ कर थाने में बंद कर देंगे। तब मैंने गुरुदेव का नाम लेकर पता जानना चाहा। तब उन्होंने कहा कि इस नाम से कोई गुरु नहीं है।

थोड़ा आगे निकलते ही उनकी गाड़ी बंद हो गई। हमें आवाज देकर बुलाया कि हमारी गाड़ी बंद हो गई। धक्का दो। थोड़ा सा धक्का लगाते ही गाड़ी स्टार्ट हो गई तो हमें बताया कि थोड़ा आगे जाते ही एकदम मोड़ पर बालाजी का बहुत बड़ा मन्दिर है। वहाँ पर रुक जाना। थोड़ा आगे जाते ही हमें वह मंदिर दिखाई देने लगा। वहाँ गये तो मंदिर के पुजारी जी जाग रहे थे। पूछा कहाँ से आये हो? हमने आने का कारण बताया। वे बोले कि यहाँ इस कॉलोनी में इस नाम के कोई गुरु नहीं है। सुबह उठ कर अपने गाँव की बस पकड़ लो, इसी में भलाई है। यहाँ कोई गुरु मिलने वाले नहीं हैं। भूखे हो तो रसोई में जाकर खाना बनाकर खालो। बालाजी की कृपा से यहाँ आटा और अन्य सामान खूब पड़ा है। हमने कहा कि बावजी हमारे पास खाना है, खा लेंगे। आपने हमे आधी रात को शरण दी, यही बहुत बड़ी कृपा है। वहाँ जाकर आराम करो। यह कहकर पुजारी जी अपनी जगह जाकर सो गए।

किन्तु हम लोगों की आँखों में नींद कहा? मेरे साथी यह कहकर मुझे चिढ़ा रहे थे, तू कह रहा था कि गुरुदेव बीकानेर के हैं। पर इतने बड़े गुरु को शहर में कोई जानता तक नहीं। उनकी बात बिलकुल सही भी थी। मैंने समझाते हुए कहा कि हमारे पास गुरुदेव का सही पता नहीं है। ऐसे गुरु तो भाग्य से मिलते हैं। मैं सही हूँ। मेरे साथ धोखा हो ही नहीं सकता। आप अभी आराम से सो जाओ। सुबह मैं ध्यान में गुरुदेव का सही पता जानकर गुरुदेव के पास ले जाऊँगा। वे बेचारे विश्वास कर निश्चिंत हो गये। मैं भी सो गया। मुझे पूर्ण विश्वास था कि गुरुदेव का पता दिख जाएगा।

सुबह उठकर शौच आदि से निवृत्त हो, नहाने की सुविधा नहीं थी। इसलिए बिना नहाये ही मैं अकेला ध्यान में बैठा। वे मेरा इंतजार कर रहे थे कि कब ध्यान से उठकर हमें बताये कि गुरुदेव कहाँ है? परन्तु बडी अजीब स्थिति हुई, रोजाना की तरह ध्यान ही नहीं लगा, पता दिखना तो बहुत दूर की बात है।

अब मुझे यह चिंता होने लगी कि गुरुदेव, मैं इनको क्या बताऊँ? समय से अधिक हठ कर बैठ गया। पर कब तक ऐसे बैठा रहूँ? हार कर आँख खोल कर बोला कि मुझे गुरुदेव के बारे में कुछ भी नहीं पता लगा।

परन्तु एक बात है कि अपन वापस प्रताप बस्ती चलते हैं। वहाँ कुछ देर तक बैठेंगे फिर आप लोग गाँव चले जाना और मैं अपनी ड्यूटी स्थल पर चला जाऊँगा। शायद आप लोगों की किस्मत में यह दीक्षा अभी नहीं लिखी है। यह सुनकर वे मेरा तरह तरह से मजाक उड़ाने लगे।

मुझे अपने साथियों से अधिक मेरी माँ की चिंता होने लगी। वह मेरे बारे में यह सब जानेगी तो कितनी दुःखी होगी? मेरे गुरुदेव भी समर्थ है। उनके बारे में भी झूठा संदेश जायेगा। मैं रास्ते भर गहरी चिंता में डूबा गुरुदेव से करूण पुकार करने लगा। हम आपको खोजने में बिलकुल ही असमर्थ हैं किन्तु आपको हमारे पास आना ही

होगा ! वहाँ पहुँच कर एक साथी ने तो मुझे धोखे बाज तक कह दिया। मैंने कहा कि मैं आपके दर्द को समझ रहा हूँ। आप चिंता न करें, मैं आपके आने जाने का किराया वहन कर लूँगा। रही बात मजदूरी की तो आपको यह पवित्र शहर देखने को मिला है, वह भी पूरा पैदल चक्कर लगाते हुए। कृपया आप लोग मेरी माँ को कुछ मत बताना। वह बहुत भोली है, जानकर बहुत दुःखी होगी।

यह बातें चल ही रही थी कि इतने में बजाज स्कूटर पर दो जने आये और दुकान दार से बोले कि कोई जोधपुर से आये हैं, गुरुदेव आ रहे है। यह सुनकर मैं दोड़कर वहाँ पहुँचकर बोला कि हम लोग ही जोधपुर से आये हैं। उन्होंने चाबी देते हुए बोला कि आप सत्संग भवन खोलो। गुरुदेव आ रहे हैं। यह सुनकर मैं खुशी से जैसे पागल ही हो गया। हम लोगों ने जंग लगे ताले को खोला तब तक गुरुदेव आ चुके थे।

हमने गुरुदेव के चरणों में प्रणाम किया। तब गुरुदेव ने कहा कि तुम घरवालों को बिना बताये क्यों आये ? मेरा यहाँ दीक्षा का कार्यक्रम नहीं है। इसलिए मैं तुम लोगों को दीक्षा नहीं दूँगा। तब मैंने हाथ जोड़कर गुरुदेव से कहा, गुरुदेव मैं तो जोधपुर में दीक्षा ले चुका हूँ किन्तु यह मेरे मित्र दीक्षा के लिए आये हैं। कोई बात नहीं गुरुदेव, हमारे लिए तो आपके दर्शन ही पर्याप्त हैं। गुरुदेव ध्यान मुद्रा में मौन रहे। फिर गुरुदेव को हम लोगों पर दया आ गई। बोले गाँव से आये हो। गाँवों में भी प्रचार होना आरंभ हो गया है। ठीक है, आप लोगों को दीक्षा दूँगा। यह कहते हुए, गुरुदेव ने चाबी देते हुए कहा कि सामने इस गुसलखाने का ताला खोलकर, नहा लो। फिर बाजार से दक्षिणा के लिए अगरबत्ती, और नारियल ले आओ। इसके पश्चात गुरुदेव ने, योग और दीक्षा के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी देकर, मंत्र दीक्षा प्रदान की, और ध्यान की विधि

बताकर ध्यान करवाया। हम सबका बहुत ही गहरा ध्यान लगा।

उसमें एक मित्र को ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ( जामसर, बीकानेर ) और बाल रूप भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य दर्शन हुए। ध्यान के पश्चात, गुरुदेव ने यह समझाते हुए कहा कि ''बेटा नाम जप करते रहो, जो भी परिवर्तन आयेगा, वह इस नाम जप और ध्यान से ही आयेगा। यह कर्म प्रधान युग है। भावुकता में मत बहो । कुछ लोग बात का बतंगड़ बना देते हैं।'' इसलिए मेरी बात जिज्ञासु लोगों को कहो।

उस समय यह बातें मेरी समझ में कम आई। परन्तु बाद में यह समझ धीरे-धीरे आने लगीं। कोरी भावुकता, मानवीय बुद्धि की साधारण अभिव्यक्ति मात्र है। जो भगवान् के असाधारण कार्य को, अपने अपूर्ण और सामान्य ढंग से पूरा करने का प्रयास करती है। और हमें अपनी आराधना के कारण, संसार के छोटे से कार्यों की कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

संसार के सभी कार्यों को भगवान् का कार्य समझते हुए ईमानदारी पूर्वक करने का सद्प्रयास करते रहना चाहिए। क्योंकि भगवान् का प्रत्येक कार्य उनकी अपनी असाधारण शक्ति के द्वारा, असाधारण तरीके से पूर्ण होता है। मेरी इस लंबी आध्यात्मिक कहानी का अभिप्राय, इसको मन बुद्धि से रोचक बनाकर प्रस्तुत करने का कदापि नहीं है। मैं इस कहानी के माध्यम से आप सभी का इस विनम्रता के साथ ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि, हम में से कोई भी विशेष नहीं है। हम सभी को विशेष शब्द को ही अपने जीवन से पूरी तरह निकाल देना चाहिए। केवल भगवान् अपने जैसे साधारण शरीरों में अपनी असाधारण शक्ति के द्वारा अपने असाधारण कार्य को मूर्त रूप देना चाहते हैं । जय गुरुदेव ! कोटि कोटि वंदना।

-त्रिलोकचन्द द्विवेदी
बालेसर

# ! ! द्विज ! !

## दूसरा जन्मदाता–गुरु

''एकमात्र हमारा धर्म है, जो इस सिद्धान्त को मानता है कि मनुष्य एक जीवन में, एक जन्म में, दो जीवन जीता है। पहले जन्मदाता भौतिक माता–पिता, जो इस हाड़मांस के शरीर की रचना करते हैं। दूसरा जन्मदाता गुरु, जिनसे दीक्षा लेकर के, मनुष्य आत्म साक्षात्कार करता है।

हमारे धर्म के इस सिद्धान्त को समझ करके, पढ़ करके और जानकारी के अनुसार, हम सारे के सारे लोग गुरु धारण कर ही रहे हैं। परन्तु गुरु धारण करने से पहले जो मानसिकता थी, खान–पान, रहन–सहन, व्यवहार जो कुछ भी पहले चल रहा था, वैसा ही बाद में चलता है। दीक्षा से पहले और दीक्षा के बाद के जीवन में कोई अन्तर नहीं दिख रहा तो दूसरा जन्म कोई काल्पनिक स्थिति नहीं है। वो वस्तु स्थिति है। मनुष्य में क्रियात्मक बदलाव आता है।''

# रहस्यवादी संत

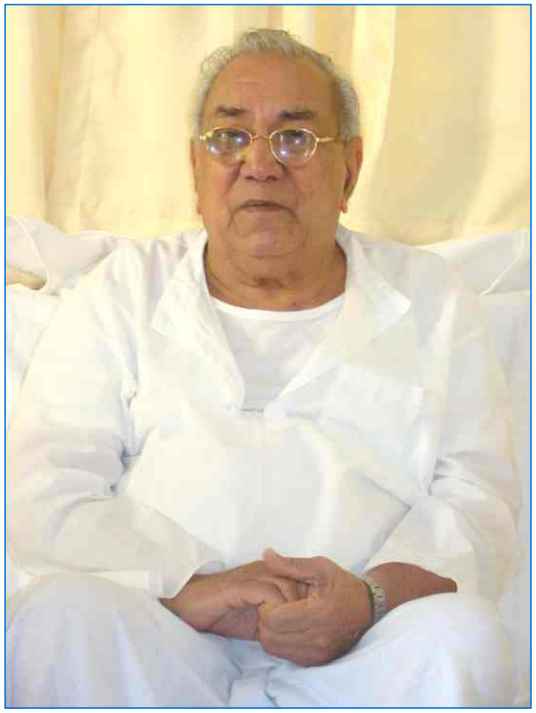

धार्मिक जगत में दो प्रकार के लोग होते हैं- धर्माथी एवं रहस्यवादी। धर्माथी व्यक्ति पहले किसी धर्म संघ (सम्प्रदाय) में धार्मिक शिक्षा ग्रहण करता है, और तब उसका अभ्यास करता है। वह स्वयं के अनुभवों को अपने विश्वास का आधार नहीं बनाता है, परन्तु रहस्यवादी साधक सत्य का अन्वेषण आरम्भ करता है, पहले उसकी प्रत्यक्षानुभूति करता है, फिर अपने मत को सूत्रबद्ध करता है।

धर्म संघ दूसरों के अनुभवों को अपनाता है, परन्तु रहस्यवादी का अनुभव अपना ही होता है। धर्म संघ बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयास करता है, जबकि रहस्यवादी भीतर से बाहर आता है। अपराविद्या तो पढ़ी-लिखी जा सकती है, परन्तु पराविद्या अनिर्वाच्य विषय है। यह केवल प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय ही है। इस समय विश्व भर में धर्माथी लोगों का एक छत्र साम्राज्य है। हमारे देश में समय-समय पर रहस्यवादी संत प्रकट होते ही रहते है।

श्री नानक देव जी, कबीर दासजी, रैदासजी, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक रहस्यवादी संत हो चुके हैं। मैं भी एक ऐसे ही रहस्यवादी संत का शिष्य हूँ। मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्रीगंगाई नाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे। मेरे संत सद्गुरु देव की असीम अहैतुकी कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

# अगम लोक की यात्रा

## राधा और कृष्ण ( पृथ्वी एवं आकाश तत्व ) के मिलन का नाम ही मोक्ष है।

गुरु शिष्य परम्परा में मंत्र दीक्षा का विधान है। शब्द की धारा के सहारे ही सहस्रार में पहुँचना संभव है, अन्यथा नहीं। इस संबंध में कबीरदास जी ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा है–

कबीरा धारा अगम की सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली,वह सभी लोकों की रचना करती हुई, मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक, उस जगत जननी राधा ( कुंडलिनी ) ने रचे। मनुष्य जीवन में जागृत करके अपने स्वामी ( कृष्ण ) के पास पहुँचाई जा सकती है।

राधा और कृष्ण ( पृथ्वी एवं आकाश तत्व ) के मिलन का नाम ही मोक्ष है। परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्व ( कृष्ण ) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है अन्य कोई नहीं।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

**मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. )–342001
संपर्क–0291–2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

# गुरु शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा

''सिद्धयोग में गुरु शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा का विधान है। गुरु, शक्तिपात करके साधक की कुण्डलिनी को चेतन करते हैं। चेतन होते ही वह शक्ति सुषुम्ना के रास्ते अपने स्वामी से मिलने सहस्रार की तरफ ऊर्ध्व गमन करने लगती है।''गुरु''का उस पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, अतः वे उसका नियंत्रण और संचालन स्वयं करते हैं।

वह शक्ति ऊर्ध्व गमन करती हुई छह चक्रों ( मूलाधार,स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र ) और तीनों ग्रन्थियों ( ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रुद्रग्रन्थि ) का वेधन करती हुई, साधक को समाधि स्थिति, जो कि समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। इस प्रकार पृथ्वी तत्त्व के आकाश तत्त्व में लय होने को ही मोक्ष अर्थात् ''कैवल्य पद'', प्राप्त होने की संज्ञा दी गई है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

**अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।**
**प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यत्ममायया।।4:6**

**( मैं ) अविनाशी स्वरूप अजन्मा होने व सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी, अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूँ।**

**-श्रीमद भागवद गीता**

# गुरु महिमा

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।
मैं भोरी डूबन डरी रही किनारे बैठ।।

गुरु-शिष्य के बीच सबसे पवित्रतम पर्व है गुरु-पूर्णिमा। आज ही के दिन वेद व्यास जी ने अपने शिष्यों को ज्ञान देना शुरू किया था इसलिए इस पर्व को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। जो ज्ञान रूपी अंजन की सलाई से अज्ञान रूपी अंधेरे से अंधी हुई आँखों को खोल देता है, उसे गुरु कहा जाता है।

सिद्ध योग केवल समर्थ गुरु द्वारा ही संचालित होता है। सिद्धयोग को महायोग भी कहते हैं क्योंकि इसमें अन्य सभी योग अंतर्निहित है। सिद्धयोग में समर्थ सद्गुरु शक्तिपात द्वारा शिष्य की कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर देते हैं। यह शक्ति निर्गुण, निराकार परब्रह्म का सक्रिय रूप है। यह शक्ति भी तभी कार्य करती है जब गुरु देना चाहे एवं शिष्य लेना चाहे क्योंकि सभी तो एकलव्य नही हो सकते।

आज लगभग सभी व्यक्तियों ने कोई न कोई गुरु धारण कर रखा है किंतु गुरु धारण करने से पहले एवं बाद के जीवन में कोई परिवर्तन नही दृष्टिगोचर होता। कारण स्पष्ट है कि जिनको गुरु बनाया उनके स्वयं के पास गुरु पद था ही नहीं। यह कलियुग की पराकाष्ठा ही है कि आज चहुँ ओर अधिकांशतया ऐसे प्रोफेशनल गुरुओं की बाढ़ सी आ गयी है।

इस कलियुग में सद्गुरु द्वारा दिया गया चेतन शब्द ही हमारी सभी समस्याओं का अंत कर सकता है। गुरु द्वारा दिये गए मंत्र एवं गुरु में कोई फर्क नही होता। गुरु द्वारा दिया गया बीज मंत्र सिद्ध किया होता है एवं उसकी प्राण प्रतिष्ठा की हुई होती है। इसमें असंख्य गुरुओं की कमाई होती है। ऐसा मंत्र अक्षरों व वर्णों का साधारण मिश्रण नहीं होता वरन चैतन्य शक्ति है।

परमात्मा का नाम परमात्मा से भिन्न नहीं है। मंत्र को परमात्मा का नाद शरीर कहा गया है अतः यह ध्वनि के

रूप में परमात्मा है। भगवतगीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है, 'यज्ञानाम् जप-यज्ञोऽस्मि'- सब प्रकार के यज्ञों में, मैं जप-यज्ञ हूँ।

जहाँ दूसरे साधन उनको प्राप्त करने का माध्यम मात्र है, मंत्र वह स्वयं है। मंत्र जप शीघ्र फलित होता है अतः नाम ही तारक है। नामजप सर्वश्रेष्ठ और सरल है क्योंकि अन्य युगों में भगवान् की प्राप्ति के लिए अनेकानेक कर्मकांड एवं यज्ञ करने पड़ते थे, जिससे उन यज्ञ में थोड़े बहुत कमोबेश जीव जल जाते थे परंतु नामजप में कोई हिंसा नहीं है। इस प्रकार कलियुग में सिर्फ और सिर्फ हरिनाम का जप ही सार्थक है।

गुरु उस बढ़ई के समान होता है, जो शिष्य रूपी लकड़ी को काट छांट कर एक निश्चित स्वरूप देता है। गुरु शिष्य को एक मुक्त जीवात्मा के रूप में परिवर्तित कर देता है। इसके लिए शिष्य को लकड़ी के टुकड़े के समान शांत, मौन एवं अहंकार रहित होना आवश्यक है ताकि गुरु उसे एक निश्चित स्वरूप प्रदान कर सके। गुरु कृपा पाने के लिए शिष्य को प्रेम एवं समर्पण का भाव रखना चाहिए।

गुरु अजर अमर है। अनादि अनंत है। उससे बढ़कर तीनों लोकों में दूसरा कोई नहीं है। वे स्थूल देह धारण कर इस संसार मे रहते हैं परंतु उनकी आत्मा सदैव परमात्मा में निवास करती है। उनका हृदय करुणा से ओतप्रोत होता है।

भक्ति ही गुरु शिष्य के संबंध का आधार है। यही अंतर्निहित मूल सिद्धांत है कि जब तक मनुष्यों में ज्ञान की पिपासा है, श्रद्धा की भावना है तब तक संसार में गुरुभक्ति सदैव रहेगी। इस प्रकार समर्थ गुरुओं का आविर्भाव सदा होता रहेगा, जिनके द्वारा अनुग्रह शक्ति की अविरल धारा शिष्यों तक प्रवाहित होती रहेगी।

'तीन लोक नौ खंड में
गुरु से बड़ा ना कोई
करता करे ना कर सके
गुरु करे सो होई'।

-राजकुमार आसवानी
गली नं. 2, धोबी तलाई,
रानी बाजार, बीकानेर

# गुरुतत्त्व सर्वव्यापक है

**श्रीनाथ चरण द्वंद्व, यस्यां दिशि विराजते ।**
**तस्यै देशे नमस्कुर्याद् भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये ।। ५० ।।**

**-गुरु गीता**

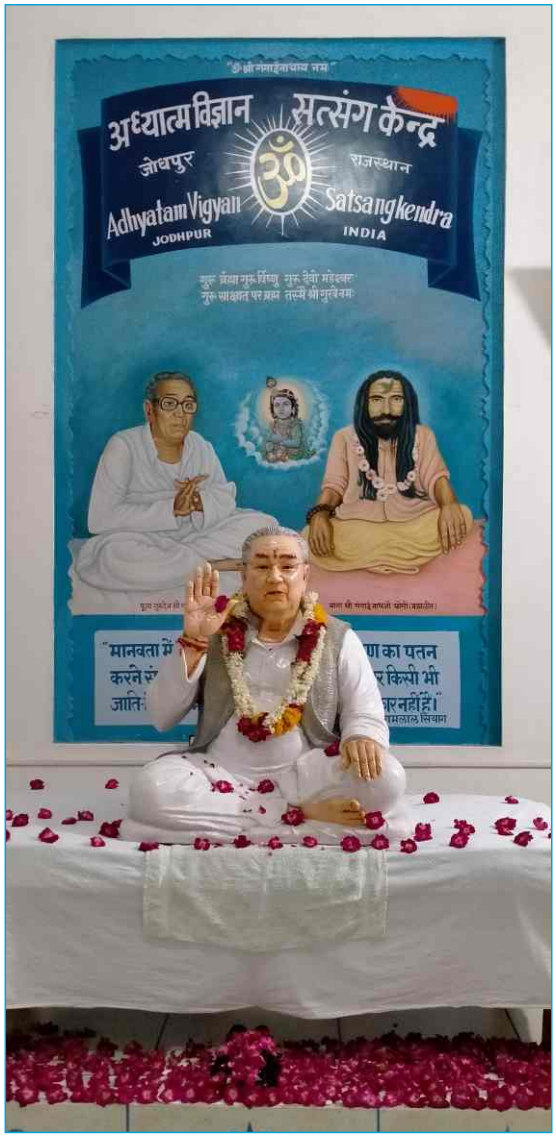


अर्थ- श्री नाथ का अर्थ भगवान् विष्णु होता है, 'श्री है शक्ति जिनकी'। दूसरा अर्थ होता है गुरुतत्त्व की शक्ति से समन्वित 'गुरुवर्ग' इनके चरण जिस दिशा में स्थित हों ( या गुरु का आश्रम जिस दिशा में स्थित हो ) उस दिशा में उस देश-की दिशा में प्रतिदिन भक्ति पूर्वक प्रणाम करना चाहिये ( हे पार्वती, भक्ति और श्रद्धा पूर्वक किया गया प्रणाम भावों को पवित्र बनाता है )।

व्याख्या- श्री गुरु शक्ति और उनका आधारभूत तत्त्व 'परशिव' सर्व व्यापक है। जगत् के कण-कण में व्याप्त है, सभी दिशाओं में वे ( गुरुतत्त्व ) विद्यमान हैं, अतः किसी दिशा विशेष का प्रश्न ही नहीं उठता, किन्तु यहाँ जो दिशा विशेष का संकेत है, यह प्राथमिक भूमिका वाले शिष्यों के लिये है, उनको वर्तमान गुरु के आश्रम की ओर गुरुपदों का चिन्तन करते हुए, प्रणाम करके प्रतिदिन भक्तिपूर्वक अपनी साधना प्रारम्भ करनी चाहिये। गुरुदेव के एक चरण में परशिव तथा दूसरे चरण में परा शक्ति का निवास है। अतः गुरु चरणों की सेवा से शिव-शक्ति दोनों की आराधना का फल मिल जाता है इस श्लोक में गुरुदेव के निवास स्थान के महत्त्व का प्रतिपादन हुआ है।।

# प्रेम आनन्द स्वरूप है

हम जब प्रेम के कारण किसी वस्तु या व्यक्ति से प्यार करते हैं, तब वह प्रेम भी उसी प्रकृत प्रेम और प्रकृत आनंद की अभिव्यक्ति मात्र है। प्रेम को चाहे जिस रूप से व्यवहार में क्यों न लाओ, प्रेम स्वभाव से ही शांति और आनंदस्वरूप है। हत्यारा, जब अपने शिशु का चुम्बन करता है, उस समय वह प्रेम को छोड़ अन्य सब कुछ भूल जाता है।

अहं का बिल्कुल नाश कर डालो। काम-क्रोध का त्याग करो-अपना सर्वस्व ईश्वर को समर्पित कर दो। नाहं नाहं, त्वमेव त्वमेव- 'मैं नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ, तू ही है, तू ही है'-मैं मर गया, रहे हो केवल तुम ही। 'मैं तुम ही हूँ'। किसी की निन्दा मत करो। यदि दुःख-विपत्ति आये तो समझो ईश्वर तुम्हारे साथ खेल कर रहे हैं-और यही समझकर दुःख में भी परम सुखी रहो।

प्रेम देशकालातीत है, वह पूर्णस्वरूप है।

– स्वामी विवेकानंद

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. )-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

# समर्पण

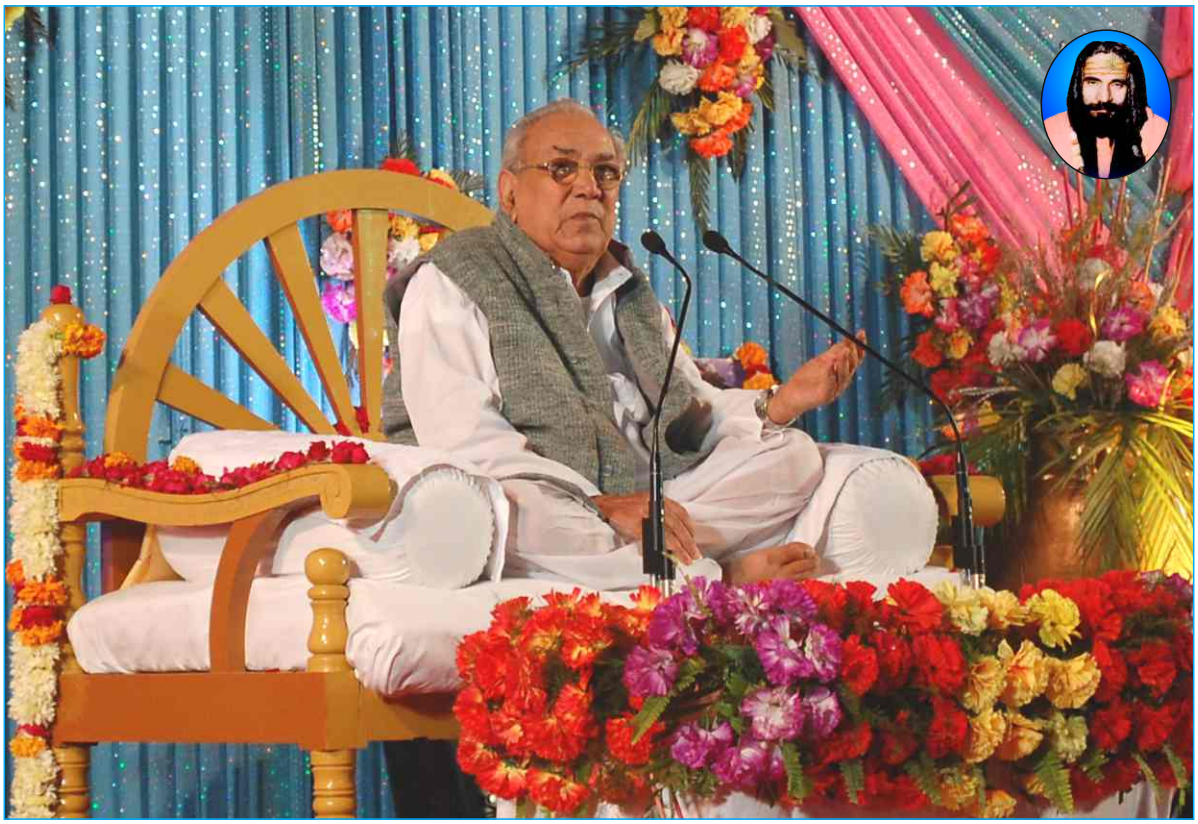

भौतिक ज्ञान की कीमत भौतिक धन है। अध्यात्म ज्ञान को भौतिक धन से न कभी खरीदा जा सका है और न ही कभी खरीदा जा सकेगा। उसके लिए तो आध्यात्मिक संत के सामने पूर्ण समर्पण ही करना पड़ेगा। तन, मन व धन से, निष्कपट भाव से उनकी सेवा करनी पड़ेगी। उस परम आत्मा सद्गुरुदेव के दिल से प्रसन्न होने पर ही यह ज्ञान मिलता है, अन्यथा नहीं।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के 34 वें श्लोक में कहा है-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ने ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन।।4:34।।

''इसलिए तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों से- भली प्रकार दण्डवत प्रणाम एवं सेवा कर के और निष्कपट भाव से किये हुए प्रश्न द्वारा, उस ज्ञान को जान। वे मर्म को जानने वाले ज्ञानी जन ( तुझे उस ) ज्ञान का उपदेश करेंगे।''

मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। मनुष्य योनि में ईश्वर के तद्रूप बना जा सकता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# अन्तर्मुखी आराधना द्वारा जीवन के रहस्य को समझना

**7:23 फिर मैंने एक स्वर्ग दूत का जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा। जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी, समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।''**

बाइबल के कई संदर्भ ऐसे भी हैं, जिनका सही अर्थ अन्तर्मुखी होकर ही समझा जा सकता है, और यह कार्य पश्चिम के लोगों के सामर्थ्य से बाहर है। इस संबंध में मुझे एक बात याद आ गई। बाइबल की भविष्यवाणियों की प्रत्यक्षानुभूति के संबंध में, मैंने भारत स्थित कई संस्थाओं से संपर्क किया था।

मैंने उन्हें बाइबल में वर्णित आनन्द के बारे में पूछा था, जिसका वर्णन इस प्रकार है- ''यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है, यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका ( प्रभु का )आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाए। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़ कर दूसरों तक बह सकता है।''

मुझे दिल्ली की एक संस्था ने कुछ सामग्री भेजी, जिसमें कटोरों के चित्र बनाकर आनन्द के उमड़ने की बात समझाई गई थी। उसे देखकर मुझे बहुत हँसी आई, और साथ में उन लोगों के अल्प ज्ञान पर तरस भी आया। मैं प्रकाशित वाक्य की चन्द बातें जो सैंट जॉहन ने पश्यन्ति वाणी में सुनी थी, यथावत लिख रहा हूँ। क्या ईसाई जगत् इनकी सही व्याख्या करके प्रमाणित करने की स्थिति में है? मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह कार्य अन्तर्मुखी हुए बिना असंभव है।

सैंट जॉहन ने लिखा है- ''मैं यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था।''कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना कि जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिखकर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे।'' जब तक अन्तर्मुखी होकर उस परम सत्ता से नहीं जुड़ते बाइबल के ऐसे संदर्भ समझ में आ ही नहीं सकते।

प्रकाशित वाक्य 1:16 ''वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था; और उसके मुख से दोधारी तलवार निकलती थी, और उसका मुह ऐसा प्रज्वलित था; जैसा सूर्य कड़ी धूप में चमकता है। 2.11 '' जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाए, उनको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।'' 2:16 सो मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।'' 2:17 जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक पत्थर भी दूँगा, और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई नहीं जानेगा।'' 2:17 और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते हैं जैसे कि मैंने भी ऐसा अधिकार अपने पिता से पाया है।''

3:4 ''पर हाँ, सरदीस में तेरे यहाँ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किये, वे स्वेत वस्त्र पहिने मेरे साथ घूमेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं।'' 3:20 देख ! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।''

7:23 फिर मैंने एक स्वर्ग दूत का जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा। जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें। तब तक पृथ्वी, समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।''

प्रकाशित वाक्य की केवल उपर्युक्त बातें ही अलौकिक नहीं, इसका तो सम्पूर्ण भाग ही प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है।

**-समर्थ सद्गुरुदेव**
**श्री रामलाल जी सियाग**

# हमें सत्य की खोज करनी होगी।

**विश्व-शांति मात्र धर्म से ही संभव है। संसार भर के सभी धार्मिक ग्रन्थ और संतों की वाणी जो सच्चाई कह रही है, जब तक हम सभी उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का प्रयत्न पूरी लगन से नहीं करेंगे, शांति मृगमरिचिका ही बनी रहेगी।**

संसार एक बहुत ही विचित्र पहेली है। परमसत्ता ने अपनी त्रिगुणमयी माया के द्वारा ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि कर्ता -भोक्ता में कोई भी अन्तर न होते हुए अन्तर नजर आ रहा है। इस युग में मात्र जीवभाव ही शेष बचा है, आत्म भाव लुप्त प्रायः हो चुका है। यही कारण है कि आज विश्व में जितनी अशांति फैली हुई है, ऐसी पहले कभी नहीं रही।

इस समय विश्व से सतोगुण लुप्त प्रायः हो चुका है। यही कारण है कि रजोगुण पर पूर्णरूप से तमोगुण का प्रभुत्व है। इसीलिए विश्व के कर्णधार भय से शांति स्थापित करने का असफल प्रयास कर रहे हैं।

पैगम्बरवादी अपने आण्विक हथियारों का भय दिखाकर ज्यों-त्यों शांति स्थापित करने का प्रयास तेज कर रहे हैं, अशांति उससे भी तेज गति से फैल रही है। आज विश्व में निरन्तर नरसंहार हो रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। आज सम्पूर्ण विश्व को 7-8 बार नष्ट करे, उतने हथियार बन चुके हैं उनसे कोई यह पूछे पृथ्वी को एक बार नष्ट कर दोगे, फिर जब विश्व में प्राणधारी कोई बचेगा ही नही तो बाकी का क्या होगा?

प्रभु ने जो शक्ति सृजन के लिए दी थी, उसका उपयोग विध्वंश में करने वाले क्या ''सेनाओं के यहोवा'' के कोप से बच सकेंगे? सेनाओं का यहोवा क्या करेगा? उन्हें इस

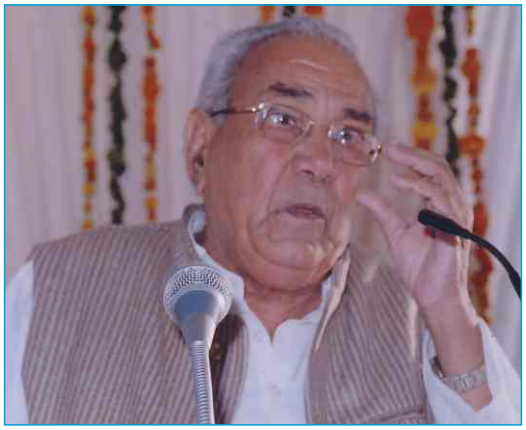

भविष्यवाणी का रोज चिन्तन करना चाहिए! '' सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, भूमि को कम्पाता और महाध्वनि करता, बवण्डर और आँधी चलाता, और नाश करने वाली अग्नि भड़काता हुआ, उसके पास आएगा।'' यशायाह 29:6।। क्योंकि विश्व भर में तामसिक वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य हैं; अतः वह शक्ति मानव को शांति से बैठ कर सोचने का मौका ही नहीं देती है।

शांति और अशांति मनुष्य के अन्दर है, आण्विक अस्त्र-शस्त्र में नहीं! उनमें शांति ढूँढना मात्र मृगमरिचिका है। भय मिश्रित शांति मानव-हृदय में जो वेदना पैदा करती है और उससे अशांति चौगुणी बढ़ती है।

विश्व-शांति मात्र धर्म से ही संभव है। संसार भर के सभी धार्मिक ग्रन्थ और संतों की वाणी जो सच्चाई कह रही है, जब तक हम सभी उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का प्रयत्न पूरी लगन से नहीं करेंगे, शांति मृगमरिचिका ही बनी रहेगी।

मानव जब तक यह समझ कर कि मानव मात्र परमेश्वर की संतानें हैं, आचरण नहीं करेगा शांति असंभव है। मात्र शांति-शांति चिल्लाने से कोई लाभ नहीं होगा। जब तक संसार के लाखों करोड़ों लोग अंतर्मुखी होकर आत्म-साक्षात्कार नहीं करेंगे, कार्य सिद्धि असंभव है।

**-समर्थ सद्गुरुदेव**
**श्री रामलाल जी सियाग**

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. )-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

# सद्गुरुदेव के अमृत वचन

कुण्डलिनी जाग्रत होकर जब सहस्रार में पहुँच जाती है, उसी का नाम मोक्ष है। मूलाधार में साढ़े तीन आंटे लगाकर कुंडलिनी सुषुप्त अवस्था में रहती है। गुरु कृपा से ही जाग्रत होती है। योग में 5 प्रकार के वायु होते हैं- प्राण, अपान, समान, उदान, और व्यान।

आजकल जितने भी गुरु हैं-उनका कोई गुरु नहीं है। वे अपने गुरु को साथ नहीं रखते। मैं अपने गुरु को हमेशा साथ रखता हूँ ( दादा गुरुदेव के चित्र की ओर इशारा करते हुए ), मेरे फोटो के साथ मेरे गुरुदेव का फोटो रहता है। मेरे अंदर जो परिवर्तन आया, मेरे गुरु की कृपा से आया है। मेरे गुरुदेव शिव के अवतार हैं।

यहाँ ( आज्ञाचक्र ) पर गुरु का ध्यान करते हैं। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है, राम और कृष्ण की तस्वीर से ध्यान नहीं लगता। गुरु कब प्रसन्न होता है? गुरु, धन दौलत देने या चढ़ावा चढ़ाने से प्रसन्न नहीं होता-बल्कि साधक जब आराधना में आगे बढ़ता है तो गुरु प्रसन्न होता है।

धन दौलत, रुपया पैसा सब कुछ यहीं रह जाता है, केवल आराधना ही साथ में रहती है, आराधना ही साथ में चलती है। अब यहाँ मुझे देखो और 15 मिनट ध्यान करो। मेरी तस्वीर से ही ध्यान लगता है।

गुरु-शिष्य परंपरा में दीक्षा का सिद्धान्त है। दीक्षा में गुरु देता कुछ नहीं है। गुरु तो काँच में तस्वीर दिखाता है, देख लो, तुम क्या हो ?

**-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग रविवार 3 जून-2012**

# गुरु भक्ति

**श्रीनाथ चरण द्वंद्व, यस्यां दिशि विराजते ।**
**तस्यै देशे नमस्कुर्याद् भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये ।। ५० ।।**

अब रही बात भक्ति की। माधुर्य भक्ति, दास भक्ति, कान्ता भक्ति, सखा भक्ति, वात्सल्य भक्ति, कई प्रकार की भक्ति है। फिर शिव, विष्णु, गणपति, भगवती, हनुमान, राम, कृष्ण अनेकानेक इष्ट हैं। सबके अपने सिद्धान्त, शास्त्र तथा नियम है जिनको लेकर कई सम्प्रदाय बन गए हैं।

सब की अपनी-अपनी दीक्षा प्रणाली है। फिर निर्गुण भक्ति तथा सगुण भक्ति भी दो प्रकार की है। कोई भगवान् को प्रियतम करके मानता है तो कोई उसे प्रियतमा कहता है।

फिर निवृत्ति परायण भक्ति तथा प्रवृत्ति भक्ति भी दो प्रकार की है। कोई भक्ति के साथ योग को लेकर चलते हैं तो कुछ योग की उपेक्षा करते हैं। किसी की जप-प्रधान भक्ति है तो किसी की कीर्तन प्रधान। जिस भी भक्त से बात करो, वह अपने ही रंग में दिखाई देता है। अपना इष्ट मंत्र तथा साधन सबको अच्छा लगता है।

भक्ति का एक रूप और है जिसे गुरु भक्ति कहा जाता है। बाकी सभी इष्टों की कल्पना करनी पड़ती है किन्तु गुरु प्रत्यक्ष होते हैं, इसलिए उनकी सेवा-भक्ति भी प्रत्यक्ष होती है। गुरु भक्तों का अपना अलग ही दर्शन है। वह सभी इष्टों की अपने गुरु में ही कल्पना करते हैं। उनके गुरु के माध्यम से ईश्वरीय शक्ति प्रत्यक्ष होती है।

**-स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज 'चित्ति लीला' पुस्तक पृष्ठ-176**

# योग के आधार

गतांक से आगे...

–महर्षि श्री अरविन्द

अनुभूति को पूर्ण रूप से भूल जाने का अर्थ केवल इतना ही है कि तुम्हारी जिस भीतरी चेतना को एक प्रकार की समाधि की अवस्था में वह अनुभूति मिली है, उसके और तुम्हारी बाहरी जागृत चेतना के बीच में अभी तक कोई पुल नहीं तैयार हुआ है, दोनों में अभी तक पर्याप्त संयोग नहीं स्थापित हुआ है। जब उच्चतर चेतना इन दोनों के बीच पुल तैयार कर देती है तब बाहरी चेतना भी स्मरण रखना आरंभ कर देती है।

जबतक सारी सत्ता रूपांतर के लिये तैयार नहीं हो जाती तब तक अभीप्सा की शक्ति और साधना के सामर्थ्य में इस प्रकार का उतार-चढ़ाव आना अनिवार्य है और सभी साधकों में आता है। जब हृत्पुरुष सामने आ जाता है या क्रिया करने लगता है और मन तथा प्राण भी उसमें अनुमति देने लगते हैं तभी साधना में तीव्रता आती है। जब हृत्पुरुष का प्राधान्य अपेक्षाकृत कम होता है, वह उतना अधिक सामने नहीं होता और निम्नतर प्राण अपनी साधारण प्रवृत्तियों में ही लगा रहता है अथवा मन अपने अज्ञानपूर्ण कार्यों में मशगूल रहता है तब, यदि साधक बहुत सावधान न हो तो विरोधी शक्ति याँ भीतर प्रवेश कर सकती हैं। सामान्यतया जड़ता ( तमस् ) साधारण भौतिक चेतना से ही आती है, विशेषकर उस समय जब कि प्राण तत्परता के साथ साधना को सहारा नहीं देता। सत्ता के सभी भागों में उच्चतर आध्यात्मिक चेतना को बराबर उतारते रहने से ही ये सब चीजें दूर की जा सकती हैं।

बीच-बीच में चेतना के नीचे उतर आने का अनुभव सभी साधकों को होता है। इसके कारण विविध होते हैं-जैसे, बाहर से आनेवाला कोई स्पर्श, प्राण की, विशेषतः निम्न प्राण की कोई ऐसी चीज जो अभी परिवर्तित नहीं हुई होती अथवा पर्याप्त रूप में परिवर्तित नहीं हई होती, प्रकृति के भौतिक अंगों से उठने वाली कोई जड़ता या मलिनता। जब ऐसा हो तब शांत बने रहो, श्रीमां की ओर अपने-आपको खोले रखो, सच्ची स्थिति को फिर से स्थापित करो तथा एक ऐसा सुस्पष्ट एवं अक्षुब्ध विवेक प्राप्त करने की अभीप्सा करो जो तुम्हें, जिस बात को ठीक करने की आवश्यकता है, उसके कारण को तुम्हारे अंदर दिखा दे।

क्रमशः अगले अंक में...

# योग के बारे में

गतांक से आगे...

मैं इसे विलीन करके अपने-आपको और तरह से व्यक्त कर सकता हूँ। यह एक भाषा विशेष का शब्द है जो बोलकर या लिखकर किसी चीज को व्यक्त करता है, उसे किसी और भाषा के शब्द द्वारा उतनी ही अच्छी तरह व्यक्त किया जा सकता है।

मैं अंग्रेजी में टाइगर कहता हूँ। मैं उसी तरह संस्कृत बोलकर शार्दूल शब्द का प्रयोग कर सकता था। इससे मेरे लिये या शेर के लिये कोई फर्क नहीं पड़ता, फर्क पड़ता है केवल मेरे विचार और वाणी के प्रतीकों के खेल में। ब्रह्म और विश्व के बारे में भी यही बात है। अपने-आप में वस्तु, और उसके प्रतीक जिनके निश्चित रूढ़िगत मूल्य हैं जिनमें से कुछ सामान्य चेतना के साथ सापेक्ष हैं और कुछ प्रतीक सत्ता की व्यक्तिगत चेतना के साथ।

उदाहरण के लिये भौतिक, मन और प्राण सामान्य प्रतीक हैं जिनका भगवान् की वैश्व चेतना में एक निश्चित सामान्य मूल्य है, लेकिन उनका एक अलग निजी मूल्य भी है और अगर हम इनका उपयोग अपने लिये, चींटी, देवता या फरिश्ते के लिये करें तो ये अपनी अलग ही छाप छोड़ते हैं या अपने-आपको अलग तरह से प्रस्तुत करते हैं। विश्व में नाम और रूप के शुद्ध रूप से रूढ़िगत मूल्य के इस अंतदर्शन को तत्वज्ञान में इस सूत्र द्वारा व्यक्त किया जाता है कि जगत् परा माया या परम वैश्व भ्रांति की सृष्टि है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि जगत् अवास्तविक है या उसके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्रों में से कोई भी जगत् के अवास्तविक होने का प्रतिपादन नहीं करता, न यह महान् परंतु दूरस्थ और कठिन सत्य शब्दों का न्यायसंगत परिणाम है जिन्हें व्यक्त करना इतना कठिन है। हमें याद रखना चाहिये कि माया, भ्रांति, स्वप्न, अवास्तविकता, सापेक्ष वास्तविकता, रूढ़िगत मूल्य केवल शाब्दिक अलंकार हैं जिनके लिये बहुत ज्यादा पांडित्यपूर्ण या तार्किक आग्रह नहीं करना चाहिये।

वे एक चित्रकार की तूलिका की भांति हैं जो अपना वांछित प्रभाव न पाकर उसे इधर-उधर फेंकता है, वे सत्य पर फेंके गये पत्थर हैं स्वयं सत्य नहीं। हम इस बात को काफी स्पष्टता के साथ देखेंगे, जब हम विश्व को एक और ही दृष्टिकोण से, माया नहीं लीला के दृष्टिकोण से देखेंगे।

परंतु कुछ महान् तत्वज्ञानी मनीषियों ने भली- भांति यह नहीं देखा कि शब्दों का भी और सब चीजों की तरह रूढ़िगत मूल्य है, वे उस सत्य के प्रतीक मात्र हैं जो अपने-आप अनिर्वचनीय हैं। उन्होंने इन शब्दों द्वारा व्यंजित भाव को बहुत कठोर और ठोस निष्कर्षों के रूप में लिया है। उन्होंने सारे संसार को एक अभागे झूठे स्वप्न के रूप में धिक्कारा है। वह एक अपरिहार्य सद्वस्तु के अमुक तत्व के कारण और भी अधिक घृणित और व्यर्थ है, इस तत्व को उनके मनों का अधिक स्पष्टदर्शी भाग अनुभव करने और आंशिक रूप में स्वीकार करने के लिये बाधित है, उनके आमुख के सत्य ने उनके सिद्धांतों को महान् तपस्वी अंतरात्माओं की मुक्ति का बहुत बड़ा साधन बना दिया। लेकिन उनके निष्कर्षों की भ्रांति ने मानव जाति को केवल मिथ्या ऐहिक जीवन नहीं समस्त ऐहिक जीवन की व्यर्थता के व्यर्थ और निष्फल सिद्धांत से आक्रांत कर दिया है। इस सृष्टि के उग्र रूपों में प्रकृति और अतिप्रकृति, मनुष्य और भगवान् दोनों ही चेतना के असत्य, वैश्व स्वप्न की कहानियाँ हैं जो स्वीकार करने योग्य नहीं हैं। इस ऐहिक जगत् से परे निर्गुण निर्वैयक्ति में लीन हो जाना ही एकमात्र करने योग्य काम है। भगवान की पूजा करने वाले, मानव पूर्णता की खोज करने वाले जो लोग मानव जाति को प्रकृति से अतिप्रकृति तक उठाना चाहते हैं उन्हें अपने मार्ग में दो बहुत बड़े रोड़े मिलते हैं, एक ओर प्रकृति की निम्न वृत्ति जो अपनी पुरानी प्राप्तियों में ही डटी रहना चाहती है, जो व्यावहारिक तथा संसारी आदमी के सम्मोहित प्रकृतवाद में प्रकट होती है और दूसरी ओर है इस लक्ष्य से बहुत ऊँचा उठना।

**-महर्षि श्री अरविन्द**
**'मानव से अतिमानव' पुस्तक से**

# वर्तमान भारत

गतांक से आगे...

बौद्ध काल के सार्वभौम राजाओं की तरह भारत का गौरव बढ़ाने वाले दूसरे कोई राजा भारत के सिंहासन पर नहीं बैठे।

इस युग के अन्त में आधुनिक हिन्दू धर्म का और राजपूत आदि जातियों का अभ्युत्थान हुआ। इन लोगों के हाथ में भारत का राजदण्ड अपनी अखण्ड प्रतिष्ठा से गिरकर फिर टुकड़े टुकड़े हो गया। इस समय राज-शक्ति के सहायक रूप में पुरोहित शक्ति का पुनः अभ्युत्थान हुआ।

इस विप्लव के समय पुरोहित-शक्ति और राज-शक्ति का वैदिक काल से चला आया और जैन-बौद्धों के विप्लव में बहुत बढ़े-चढ़े आकार में प्रकट, वह पुराना वैर मिट गया। अब ये दोनों प्रबल शक्तियाँ एक दूसरे की सहायक हो गयीं। परन्तु अब ब्राह्मणों में न वह तेज ही रहा और न क्षत्रियों में वह प्रचण्ड बल ही। एक दूसरे की स्वार्थ-सिद्धि में सहायता देने, विपक्षियों का सर्वनाश करने तथा बौद्धों का नाम तक मिटाने में ही ये दो सम्मिलित शक्तियाँ अपने बल को गँवाती रहीं और तरह तरह से बँटकर प्रायः नष्ट सी हो गयीं। दूसरों का रक्त चूसना, धन हरण करना, वैर चुकाना आदि इन लोगों का नित्य का काम था।

ये प्राचीन राजाओं के राजसूय आदि यज्ञों की थोथी नकल किया करते, भाटों और चारणों आदि खुशामदियों के दल से घिरे रहते, और मन्त्र-तन्त्र के घोर शब्द-जाल में फंसे थे। इसका फल यह हुआ कि ये लोग पश्चिम से आये हुए मुसलमान व्याधों के सहज शिकार बन गये।

जिस पुरोहित-शक्ति की लड़ाई राज-शक्ति के साथ वैदिक काल से ही चली आ रही थी, जिस शक्ति की प्रतिस्पर्धा को भगवान् श्री कृष्ण ने अपनी अमानव प्रतिभा से अपने समय में मिटा सा ही दिया था, जो पुरोहित-शक्ति जैन और बौद्ध विप्लव के समय भारत के कर्मक्षेत्र से प्रायः लुप्त सी हो गयी थी अथवा जिसने उन प्रबल प्रतिस्पर्धी धर्मों की दासता स्वीकार कर किसी तरह अपने दिन काटे थे, जिस पुरोहित-शक्ति ने मिहिरकुल आदि के भारत विजय करने पर कुछ दिन तक अपना पहला अधिकार फिर प्राप्त करने के लिए पूरा प्रयत्न किया था और इसके लिए मध्य एशिया से आयी हुई निष्ठुर बर्बर सेनाओं के अधीन होकर उनकी घृणित रीति-नीतियों को अपने देश में प्रचलित किया था तथा साथ ही साथ जिस पुरोहित-शक्ति ने उन निरक्षर बर्बरों को प्रसन्न रखने के लिए, ठगने के सरल उपाय मन्त्र-तन्त्रादिक की शरण ली थी और इस कारण अपनी विद्या, बल और सदाचार को बिल्कुल खोकर आर्यावर्त को कुत्सित, गन्दे बर्बराचार का एक बड़ा दलदल बनाया एवं कुसंस्कार और अनाचार के निश्चित फलस्वरूप जो निस्सार और अत्यन्त दुर्बल हो गयी थी, वही पुरोहित-शक्ति पश्चिम से आयी हुई मुसलमान आक्रमणरूपी आँधी के स्पर्श मात्र से चर चर होकर भूमि पर गिर गयी। अब, फिर वह कभी उठेगी या नहीं, कौन जाने?

मुसलमानों के समय में इस शक्ति का फिर सिर उठाना असम्भव था। मुहम्मद साहब स्वयं इसके पूरे विरोधी थे। इसे समूल नष्ट करने के लिए वे नियम आदि भी बना गये हैं। मुसलमानों के राज्य में राजा स्वयं प्रधान पुरोहित रहा है। वही धर्मगुरु (खलीफा) रहा है और सम्राट होने पर प्रायः सारे मुसलमान जगत् के नेता होने की आशा रखता है।

मुसलमानों के लिए यहूदी या ईसाई अधिक घृणा के पात्र नहीं हैं; वे केवल अल्पविश्वासी ही हैं, पर हिन्दू लोग तो काफिर और मूर्ति-पूजक होने से इस जीवन में बलिदान, और मृत्यु के बाद अनन्त नरक के भागी समझे जाते हैं। इन्हीं काफिरों के धर्मगुरुओं अर्थात् पुरोहितों को किसी प्रकार जीवन धारण करने की आज्ञा मात्र मुसलमान राजा दया कर दे सकते थे और वह भी कभी कभी; नहीं तो जहाँ राजा की धर्मप्रियता की मात्रा जरा भी बढ़ी कि काफिरों की हत्यारूपी महायज्ञ का आयोजन हो जाता था।

-संदर्भ-श्री विवेकानन्द
साहित्य भाग-9, पृष्ठ-201 से

क्रमशः अगले अंक में...

# गुरु शक्ति का अनुग्रह

**अयं मयांजलिर्बद्धो, दया सागरवृद्धये।**
**यदनुग्रहतो जन्तुश्चित्रसंसार मुक्तिभाक् ।।48 ।।गुरु गीता**

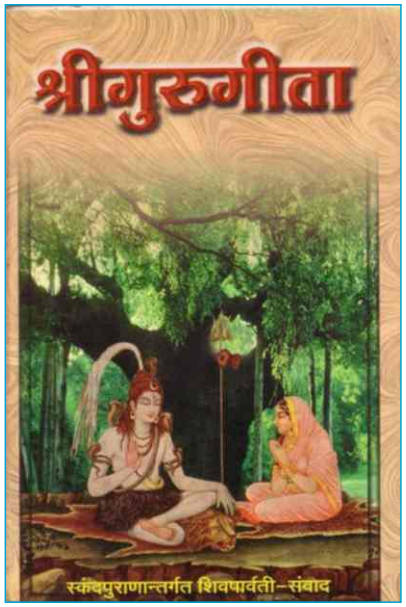


अर्थ- अपनी सर्वतोमुखी वृद्धि (उन्नति) के लिये दयासागर इन गुरु देव की बद्धांजलि होकर (प्रार्थना- करना चाहिये कि हे दया सागर ! आप मेरी साधना की वृद्धि में सहायक हों।) प्रणाम करना चाहिये। जिनके अनुग्रह प्राप्ति के बाद प्राणी इस चित्र (विविधता से भरे हुए) संसार से मुक्ति का भागी बनता है।

व्याख्या- गुरुदेव तो दया के सागर होते हैं। उनका प्राकट्य ही शिष्यों के कल्याण के लिये होता है, किन्तु शिष्यों को उनके समक्ष बद्धांजलि होकर, अर्थात् विनम्रता पूर्वक श्रद्धा सहित प्रणाम की मुद्रा में प्रस्तुत होना चाहिये। बद्धांजलि का एक अर्थ और लिया जा सकता है, जब तक खुले हाथ होते हैं द्वैत का प्रतीक है, और जब दोनों हाथ मिल जाते हैं तो अद्वैत भाव की मुद्रा बन जाती है, जिसका अर्थ होता है कि संसार के प्रति मेरी जो द्वैत भावना है, उसका आप नाश कर दें।

"चित्र संसार मुक्तिभाक्" का अर्थ होता है कि यह संसार नाना प्रकार की विविधता से युक्त होने के कारण चित्र की भाँति सब को अपनी ओर आकर्षित करता रहता है और इस प्रकार नाना प्रकार के संस्कारों को जन्म देता है, जो बन्धन के कारण होते हैं एवं इसी कारण आवागमन के चक्र से मुक्ति नहीं मिल पाती।

यहाँ शिष्य, गुरु शक्ति के अनुग्रह प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए, संचित संस्कारों के क्षीण करने हेतु एवं अपने अभ्युदय के लिये प्रार्थना कर रहा है। मुक्ति की याचना कर रहा है।

❖❖❖

# सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा

''मेरे शिष्यों में तो सभी जाति के लोग हैं। अब शरीर का system तो सबका एक जैसा है, परिवर्तन भी सब में एक जैसा ही आ रहा है। मैं तो कह देता हूँ-हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता है, वो तो मनुष्य के रूपान्तरण की बात करता है, मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है।

कितने ईसाई, मुसलमान बना लिये, कर क्या लिया? मैं तो कहता हूँ आप जिस धर्म में हो; बैठे रहिये। मगर अपने विकास की एक क्रियात्मक विधि है। उसके अनुसार अपनी शक्तियों को चेतन करके जीवन में उपयोग लो।

गुरु के पास देने-लेने के लिए कुछ नहीं होता है। देखिये ! मैं आपको बताता हूँ, जो सिस्टम मेरा है; वो आप सब का है। आप जन्म से पूर्ण हो। आपको इसकी जानकारी नहीं है। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा। मैं तो आराधना का एक तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत (वास्तविकता) जान जाओगे; आप क्या हो?

देने-लेने के लिए, किसी के पास कुछ भी नहीं है ! बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है, जो कुछ है-अंदर है, उसको चेतन करने का एक तरीका है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

# सर्वोत्तम यज्ञ-नाम ( मंत्र ) जप

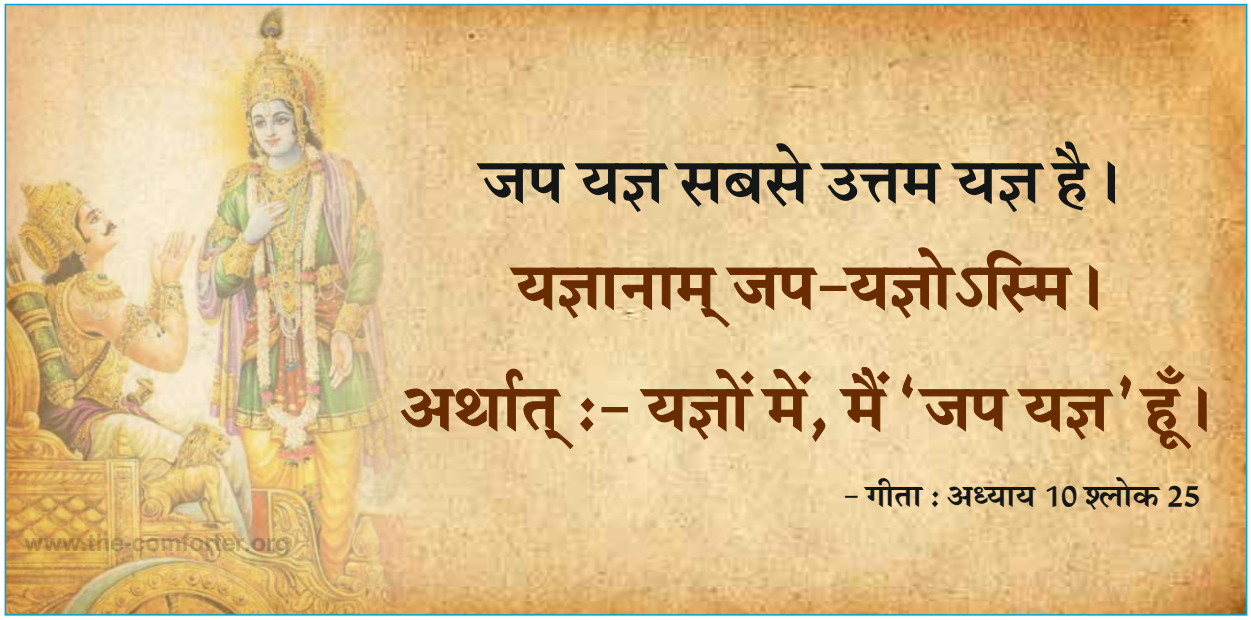


देखिए ! हर युग में, हमारे दार्शनिक ग्रन्थों के अनुसार आराधना का तरीका तय होता है। सत्युग का अलग था, त्रेता का अलग था, द्वापर का अलग था। हमारे धर्म में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, आराधना तय की गई है। अब कलियुग में क्योंकि मनुष्य की सामर्थ्य को देखते हुए, त्रेता और द्वापर के आराधना के तरीके करना संभव नहीं है इसलिए इस युग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है-ईश्वर के नाम का जप। नाम जप को भगवान् कृष्ण ने सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।

भगवान् ने गीता में, दसवें अध्याय में अपने स्वरूपों का वर्णन किया है- पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है। महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है जिससे कोई हिंसा नहीं होती है। महाभारत काल में हिंसा बहुत हुई इसलिए वह लोग हिंसा से बहुत डरते थे। नाम जप से कोई हिंसा नही होती। कर्म काण्डी यज्ञ करोगे, आग में घी लकड़ी जलाओगे तो कमोबेश थोड़े बहुत जीव जलेंगे। मगर नाम जप में कोई हिंसा नहीं और मनु ने, मनु स्मृति में कहा है कि जप यज्ञ से, कर्म काण्डी यज्ञों से हजार गुणा ज्यादा फायदा होता है।

मैं तो आपको एक नाम बताऊँगा, वह आपको जपना है। वैसे क्योंकि मैं एक कृष्ण उपासक हूँ, इसलिए राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ। भगवान् कृष्ण पूर्णावतार थे और उस कृष्ण के नाम का ही चमत्कार है कि यह सब परिवर्तन हो रहा है। मेरा कोई पंथ नहीं, नया मत नहीं। वही वैदिक दर्शन को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

**-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग**

## क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव ( मानव ) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

## प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

### शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

**( सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण )**

### ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर ( जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं ) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप ( बिना होंठ-जीभ हिलाए ) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया ( आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम ) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से ( केवल 15 मिनट ) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

### Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

www.the-comforter.org

**मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

# 'मेरी तस्वीर नहीं मरेगी' !

''एड्स क्योरेबल के 50 हजार पोस्टर लगा दिये। भारत सरकार को मालुम है, अच्छी तरह से। बीकानेर में मेरे पर मैजिक एक्ट की एफ आई आर करवा दी कि मैं मैजिक करता हूँ। मैंने कहा, – हाँ, मैजिक करता हूँ, पर मैजिक तो दो तरह के होते हैं– White (सफेद) और Black(काला )। Black क्या कर रहा है, उसकी ही आपको जानकारी है। मुझे Black Magician ( ब्लैक मैजिशियन )क्यों मान लिया ?

मैं जो दे रहा हूँ, उससे कई बीमारियाँ खत्म हो रही हैं, शांति मिल रही है, सब रोगों से मुक्त हो रहे हैं, नशों से मुक्त हो रहे हैं तो अब वो बोलते नहीं हैं, अब चुप हो गये। कहते हैं कि 81 वर्ष का तो हो गया। साल दो साल और जियेगा, मर जाएगा, पीछा छूट जाएगा। मैंने कहा मरना तो तुमको भी पड़ेगा, मुझको भी पड़ेगा। मगर मेरी तस्वीर नहीं मरेगी। मेरी तस्वीर से जो योग हो रहा है, वो नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी।

**–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग**

## काले जादू और सफेद जादू में अन्तर –

काला जादू दुनिया में कुछ चमत्कार दिखाकर, ठगने, हिंसा और पतन की ओर ले जाता है। उसका अंत बुरा ही होता है। पहले तो कुछ भला करने का प्रलोभन दिया जाता है; लेकिन आखिर में परिणाम बुरा ही निकलता है। इसकी जानकारी सारी दुनिया को है। लेकिन एक White Magic भी होता है जिसकी जानकारी दुनिया को नहीं है, जो मनुष्य को सब कष्टों, आडम्बरों व नशों से मुक्त करके, देवत्व की ओर ले जाता है। मनुष्य स्वयं परमात्मा है, इस निज स्वरूप का ज्ञान करा देता है। सफेद जादू (White Magic) का करिश्मा देखने के लिए, सद्गुरुदेव द्वारा दिये संजीवनी मंत्र का सघन जाप व उनकी तस्वीर का ध्यान करके देखें !

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

# शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

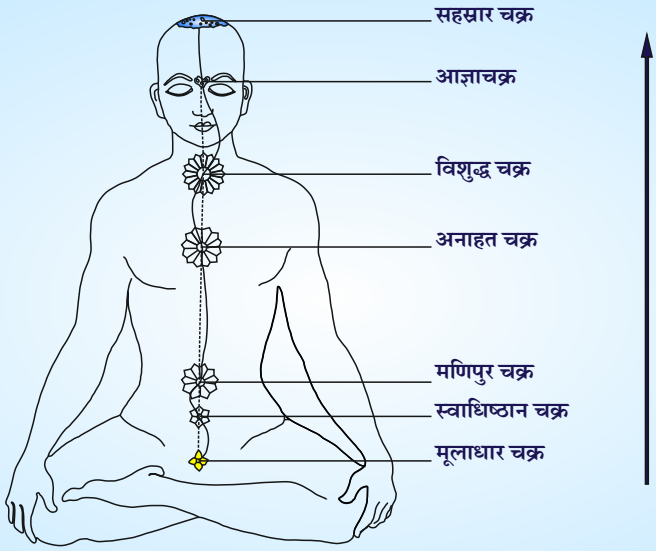




चेतना के सूक्ष्म केन्द्र

शक्तिपात से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब क्या होता है, इस संबंध में 'स्वात्माराम हठयोग प्रदिपिका' में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जाग्रर्ति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि भिदयन्ति ग्रन्थयो पिच।।

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का वेधन होता है।'' जाग्रत हुई कुण्डलिनी, सुषुम्ना नाड़ी में से होकर ऊर्ध्व गमन करने लगती है। वह छह चक्रों-मूलाधार,स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र और तीनों ग्रन्थियों-ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि एवं रुद्रग्रंथि का वेधन करती है, और अन्त में समाधि स्थिति, जो कि समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है।

परन्तु विश्व का कोई भी दर्शन क्रियात्मक ढंग से मोक्ष प्राप्ति का पथ प्रदर्शित नहीं करता। यह अद्वितीय दिव्य ज्ञान तो मात्र सनातन धर्म की देन है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर ( राज. ) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्______________________________

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राजस्थान ) से प्रकाशित।